अक्टूबर , 2023, वर्ष : 44 अंक : 10 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का मैक्सिको की संसद मे स्वागत।

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

अक्टूबर , 2023, वर्ष : 44 अंक : 10

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

सिकोंग पेंपा छेरिंग के साथ मेक्सिको सांसद के डिप्टी साल्वाडोर कारो।

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी, थुप्तेन रिन्ज़ीन

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छरिंग, ताशी देकि

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

• ताइवान से आए शिष्यों का परम पावन ने चेनरेजिग अभिषेक किया 1

• सिक्किम में बाढ़ से हानि पर परम पावन ने दुख जताते हुए मुख्यमंत्री को लिखा 2

• मैक्सिको की संसद ने सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की आधिकारिक मेजबानी की, तिब्बत के समर्थन में विज्ञप्ति जारी की 3

• साओ पाउलो की स्टेट असेंबली में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का स्वागत 4

• सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का कोलंबिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में 'निर्वासन और विस्थापन: अंतःविषयक प्रतिबिंब' पर व्याख्यान 5

• चीन के साथ अपनी स्थिति के कारण लैटिन अमेरिका तिब्बती मुद्दे पर और अधिक मदद का प्रयास कर सकता है: मेक्सिको में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग 6

• धार्मिक आयोजन के लिए चंदा इकट्ठा करने वाले आठ तिब्बतियों को हिरासत में लिया गया 7

• यूरोपीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने कालोन नोरज़िन डोल्मा से मुलाकात कर तिब्बत से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की 8

• अमेरिकी सत्ता केंद्र कैपिटोल हिल मे परम पावन दलाई लामा को अमेरिकी कांग्रेस के स्वर्ण पदक दिए जाने की १६वीं वर्षगांठ मनाई गई 9

• बाइडेन कैबिनेट के सदस्यों से तिब्बत में डीएनए संग्रह, परिवार अलगाव के खिलाफ कार्रवाई का आग्रह 10

समाचार -

• सीसीपी को लेकर गठित हाउस सेलेक्ट कमेटी ने चीन-तिब्बत वार्ता को शांतिपूर्ण ढंग से बहाल करने का आह्वान करते हुए वक्तव्य जारी किया 11

• ऑस्ट्रिया और जर्मनी से आए यूरोपीय सांसदों ने अपनी संसदों में चीन-तिब्बत संघर्ष पर प्रस्ताव पेश करने को लेकर चर्चा करने का आश्वासन दिया 12

• चीन के तहत क्षेत्रों में मानवाधिकारों की गिरावट पर चर्चा के लिए जिनेवा फोरम-२०२३ शुरू 13

• ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के प्रतिनिधिमंडल ने अपने अध्यक्ष के नेतृत्व में निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 14

• बीटीएसएम के उत्तर क्षेत्र चैप्टर ने रजत जयंती मनाई 15

• दक्षिण भारत में स्थापित पांच तिब्बती बस्तियों के सेटलमेंट अधिकारियों और सीआरओ ने कर्नाटक सरकार के उच्च अधिकारियों से शिष्टाचार मुलाकात की 16

• उत्तर प्रदेश के कुशीनगर स्थित बुद्ध डिग्री पीजी कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया 17

• उत्तर प्रदेश के पावानगर महावीर इंटर कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित 18

• उत्तर प्रदेश के कुशीनगर और पडरौना के कॉलेजों में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित 19

• नागपुर में तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक आयोजित 20

• नागपुर में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित 21

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

• भंडारा जिले के बेला के महेंद्र जूनियर साइंस कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित 22

• क्या चीन तिब्बती पहचान को मिटाने के लिए नए आवासीय स्कूलों का उपयोग कर रहा है? 22

◆ गांधी जंयती पर तिब्बती संघर्ष को अहिंसक रखने हेतु पुनः संकल्प

इस वर्ष भी गत 02 अक्टूबर, 2023 को तिब्बती समुदाय द्वारा महात्मा गांधी की जयंती पूरे उत्साह के साथ मनाई गई। गांधी जयंती तिब्बती समाज के लिये एक वार्षिक उत्सव बन चुकी है। इस आयोजन के परिणामस्वरूप तिब्बती संघर्ष सदैव शांतिपूर्ण तथा अहिंसक बना रहता है। गांधीजी मानते थे कि पवित्र लक्ष्य की प्राप्ति पवित्र साधन से ही होनी चाहिये। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी अपने इस विचार का प्रयोग तत्परता से करते थे।

तिब्बती आंदोलनकारी गांधी की शांति-अहिंसा से पूरी तरह प्रभावित हैं। तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु परमपावन दलाईलामा बौद्ध चिंतन में निहित शांति-अहिंसा से पूर्णतः प्रेरित हैं। उनकी प्रेरणा-प्रोत्साहन-मार्गदर्षन से ही तिब्बती शांतिप्रिय और अहिंसक हैं। स्वयम् दलाईलामा गांधी के प्रषंसक हैं। उन्हें पूरा विष्वास है कि विस्तारवादी चीन सरकार की क्रूरतापूर्ण दमनात्मक तिब्बत नीति का विरोध शांतिपूर्वक ही संभव है।

निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग (राजप्रमुख) पेंपा त्सेरिंग ने गांधी जयंती के अवसर पर विष्वास व्यक्त किया कि सभी तिब्बती भविष्य में भी अपने संघर्ष को शांतिपूर्ण एवं अहिंसक रखेंगे। विस्तारवादी चीन ने सन् 1959 में स्वतंत्र देष तिब्बत पर क्रूरतापूर्वक अवैध कब्जा कर लिया था। यह अंतरराष्ट्रीय कानून, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा मानवीय आदर्षों का निंदनीय उल्लंघन था। उस समय तिब्बत के तत्कालीन राजप्रमुख एवं धर्मप्रमुख दलाईलामा अपने हजारों सहयोगी तिब्बतियों के साथ भारत आ गये। वे भारत को गुरु कहते हैं तथा तिब्बत को भारत का चेला। भगवान बुद्ध के विचार भारत से ही तिब्बत पहुँचे थे। वे भारत को अपना दूसरा घर कहते हैं। तिब्बती भारत में शरणार्थी होकर भी भारतीय संस्कृति को मजबूत कर रहे हैं। दलाईलामा देष-विदेष में हमेषा प्राचीन भारतीय नालंदा परंपरा का गौरवगान करते हैं। बौद्ध नालंदा परंपरा में शांति, अहिंसा, करुणा तथा सद्भाव जैसे मानवीय मूल्यों पर बल है।

दलाई लामा अपने समस्त राजनैतिक अधिकार निर्वासित तिब्बत सरकार को सौंप चुके हैं। वे सिर्फ धार्मिक जिम्मेदारियाँ निभा रहे हैं। इसके बावजूद तिब्बती संघर्ष के मुख्य प्रेरणास्रोत वे ही हैं। उनके कठिन प्रयासों से ही तिब्बत का सवाल अंतरराष्ट्रीय सवाल बना हुआ है। इसी प्रकार लोकतंत्र के प्रति उनकी निष्ठा के कारण ही तिब्बती समुदाय में लोकतंत्र मजबूत हो रहा है। तिब्बती अपने वयस्क मताधिकार का प्रयोग कर चुनाव प्रक्रिया द्वारा तिब्बत सरकार का निर्वाचन कर रहे हैं। निर्वासित तिब्बत सरकार वास्तव में निर्वाचित तिब्बत सरकार है। तिब्बत सरकार के वर्तमान सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग दलाईलामा के आषीर्वाद तथा तिब्बतियों एवं तिब्बत समर्थकों के सहयोग से तिब्बत के सवाल को सुव्यवस्थित तरीके से लगातार उठा रहे हैं। दलाईलामा इसी अक्टूबर, 2023 में हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिले में धर्मषाला स्थित अपने निवास पर अनेक धर्मगुरुओं, पत्रकारों तथा विद्वानों आदि के समक्ष प्रवचन करते हुए तिब्बत की वर्तमान बुरी स्थिति से व्यथित दिखाई दिये। अपने प्रवचन में उन्होंने विष्वशांति के लिये मानवीय मूल्यों को लगातार मजबूत करने पर बल दिया। वयोवृद्ध दलाईलामा ने अपने संबोधन में लोगों को आष्वस्त किया कि वे 15-20 साल अभी और जीवित रहेंगे। इस आष्वासन से तिब्बतियों और तिब्बत समर्थकों का अत्यधिक प्रसन्न तथा ऊर्जावान होना स्वाभाविक है।

सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग तिब्बत की दर्दनाक स्थिति से लोगों को परिचित कराने के लिये लगातार अथक प्रयास कर रहे हैं। इसी अक्टूबर माह में उन्होंने चिली, कोस्टारिका, कोलंबिया, ब्राजिल और मेक्सिको का प्रवास किया है। सभी जगह तिब्बतियों तथा तिब्बत समर्थकों द्वारा उनका गर्मजोषी से स्वागत किया गया। अवैध चीनी नियंत्रण के कारण तिब्बत का षड्यंत्रपूर्वक चीन द्वारा चीनीकरण किया जा रहा है। चीन सरकार तिब्बत के प्राकृतिक संसाधनों को लूट रही है और नष्ट कर रही है। तिब्बत में विकास के नाम पर वह तिब्बती पर्यावरण को प्रदूषित कर रही है। तिब्बत में बचे-खुचे धार्मिक संस्थान तथा स्थल भी मिटने के कगार पर हैं। तिब्बती बच्चों को सुनियोजित तरीके से तिब्बती सांस्कृतिक मूल्यों एवं परंपराओं से दूर किया जा रहा है। मानवाधिकार हनन बढ़ता जा रहा है। शांतिप्रिय एवं अहिंसक तिब्बती आंदोलनकारियों, कलाकारों, पत्रकारों, विचारकों और साहित्यकारों आदि को उनके परिजनों-परिचितों सहित चीनी जेलों में ठूँसा जा रहा है। इनके बारे में कोई जानकारी भी नहीं दी जाती।

सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग बताते हैं कि चीन की तिब्बत नीति के कारण "संसार की छत तिब्बत" प्रदूषण का षिकार है। इसी तरह "तीसरा ध्रुव तिब्बत" अपने ग्लेसियर्स (हिमनद) से वंचित हो रहा है। तिब्बती ग्लेसियर्स सिकुड़ते-सूखते जा रहे हैं। जैव विविधता घटती-मिटती जा रही है। कुल मिलाकर तिब्बत की तिब्बती पहचान ही संकटग्रस्त है। दक्षिण अमरीकी देषों में अपने प्रवास के दौरान पेंपा त्सेरिंग ने तिब्बत की वर्तमान दुर्दषा की प्रामाणिकता के साथ चर्चा की है तथा वहाँ के लोगों को उन्होंने इस संदर्भ में जागरुक किया। उन्होंने सभी जगह स्पष्ट किया कि तिब्बत में सुनियोजित अत्याचार को रोकने के लिये चीन सरकार की मनमानी रोकनी होगी।

सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग ने अमरीका के वाषिंगटन में भी प्रवास किया। वहाँ उन्होंने अपने प्रतिनिधिमंडल सहित तिब्बत संबंधी अमरीका के विषेष समन्वयक, अमरीकी सीनेट के स्पीकर तथा प्रतिनिधि सभा के सभापति से वार्ता की। उन्होंने तिब्बतियों को मिल रहे अमरीकी समर्थन की सराहना करते हुए निवेदन किया कि अमरीकी कांग्रेस नये प्रस्ताव पारित कर चीन सरकार की मनमानी को रोके। उन्होंने विष्वास व्यक्त किया कि तिब्बत संबंधी अमरीकी समर्थन एवं सहयोग सदैव बढ़ता रहेगा।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ ताइवान से आए शिष्यों का परम पावन ने चेनरेज़िग अभिषेक किया

dalailama.com, ०४ अक्तूबर,२०२३

थेकचेन चोएलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज ०४ अक्तूबर की सुबह जब परम पावन दलाई लामा छुगलागखांग में चेनरेज़िग महामंत्र से अभिषिकृत करने पहुंचे तो वहां प्रात:कालीन सूर्य की भीनी-भीनी किरणें मंद-मंद बरस रही थीं। वहां पहुंचकर परम पावन मुस्कुराए और धीरे से शिष्यों और शुभचिंतकों की ओर हाथ हिलाया, अपना स्थान ग्रहण किया और तुरंत अभिषेक की प्रारंभिक प्रक्रियाएं शुरू कर दीं। प्रारंभ में 'हृदय सूत्र' का जाप पहले चीनी भाषा में और फिर तिब्बती भाषा में किया गया।

जब वह तैयार हो गए तब परम पावन ने सभा में अपना प्रवचन शुरू किया।

'आज यहां थेकचेन चोएलिंग छुगलागखांग में ताइवान से पधारे हमारे धर्म मित्र मुख्य शिष्य के तौर पर उपस्थित हैं। बौद्ध धर्म सैकड़ों वर्षों से तिब्बत, मंगोलिया और चीन में फला-फूला है। जब मैं १९५५ में चीन गया था तो मैंने वहां कई बौद्ध मंदिर और मठ देखे थे। तिब्बत, चीन और मंगोलिया का भी अवलोकितेश्वर से विशेष संबंध है।

'चीन की कम्युनिस्ट सरकार ने संकीर्ण सोच के कारण तिब्बत में बौद्ध धर्म का दमन किया है, लेकिन आज चीन में बौद्ध धर्म के प्रति एक बार फिर रुचि बढ़ रही है। इसके साथ ही तिब्बत पर अवलोकितेश्वर की कृपा बरसती रहती है। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि चाहे हम धार्मिक हों या नहीं, हम सभी को सुहृदय होना जरूरी है। हमें दूसरों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। अवलोकितेश्वर करुणा के अवतार हैं और पूरे हिमालयी क्षेत्र के लोग उनका भक्त होने के कारण गुणी और सुहृद हैं।

'मुझे १४वें दलाई लामा के रूप में जाना जाता है। तिब्बत के लोगों के साथ मेरा जन्म-जन्म का कार्मिक संबंध रहा है। आज मैं संक्षिप्त अवलोकितेश्वर अभिषेक कराने जा रहा हूं। यद्यपि अवलोकितेश्वर से संबंध होने के कारण तिब्बत, चीन और मंगोलिया में भारी परिवर्तन हुए हैं, फिर भी हम बचपन से ही छह अक्षरों वाले मंत्र का जाप करते आ रहे हैं।

'इन दिनों दुनिया में शांति की बातें चहुंओर जोर-शोर से हो रही है। लेकिन शांति प्राप्त करने के लिए हमलोगों को सबसे पहले मानसिक शांति प्राप्त करने की आवश्यकता है।

'मानव समूह में रहने के लिए हमें सुहृदय बनने की आवश्यकता है। बचपन में हम अपनी मां की देखभाल और प्यार की छत्रछाया में रहते है। वह हमें जन्म देने के बाद प्यार और जतन से पालन-पोषण करती है। यह अनुभव हम पर गहरा प्रभाव डालता है। इससे हमें यह सीख मिलती है कि हम भी दूसरों के प्रति प्रेमपूर्ण और दयालु हो सकते हैं। मेरे धर्म मित्रों, मैं आपसे सुहृद बनने का आग्रह करता हूं।'

परम पावन ने आगे समझाया कि इस पृथ्वी पर रहनेवाले सभी आठ अरब लोग समान रूप से दुख से मुक्ति और सुख की इच्छा रखते हैं। उन्होंने कहा कि बोधिचित्त की साधना करने से मन की शांति मिलती है। यह शरीर में संतुलन भी लाता है और हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को अच्छा रखने में योगदान देता है। हममें से जो अवलोकितेश्वर की उपासना करते हैं, वे करुणा पर ध्यान देते हैं। छह अक्षरों वाले मंत्र-ओम मणि पद्मे हुम्- का पाठ करने से हमें अपने अंदर करुणा पैदा करने में मदद मिलती है।

परम पावन ने आगे कहा कि वह सुबह उठते ही बोधिचित्त पर ध्यान करते हैं और उससे निकले विचार को शून्यता में अंतर्दृष्टि के साथ जोड़ते हैं। उन्होंने अपने को प्रेरित करनेवाले 'मध्यम मार्ग में प्रवेश' के छंदों का हवाला दिया।

इस प्रकार, ज्ञान के प्रकाश की किरणों से प्रकाशित
बोधिसत्व अपनी खुली हथेली पर आंवले की तरह स्पष्ट रूप से देखते हैं
कि तीनों लोक अनादि और अनंत हैं
और सनातन सत्य की शक्ति के माध्यम से वह चिर शांति की ओर यात्रा करता है।
यद्यपि मन निरंतर चिर शांति में विश्राम कर सकता है,
वह अभव्य प्राणियों के लिए भी करुणा उत्पन्न करता है।
आगे चलकर वह अपने ज्ञान से भी खुद प्रकाशित होगा
वे सभी बुद्ध के उपदेशों और मध्य बुद्धों से पैदा हुए हैं।
और अन्य निपुण हंसों से आगे राजहंस की तरह उड़ते हुए
अनंत में व्याप्त सनातन और परम सत्य रूपी सफेद पंखों के बल पर,
पुण्य की शक्तिशाली हवाओं से प्रेरित होकर,
विजेताओं के गुणों के समुद्र के सर्वोत्तम सुदूर तट तक
बोधिसत्व यात्रा करेंगे।

परम पावन ने उल्लेख किया कि राजा सोंगछेन गम्पो को अवलोकितेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त था। उन्होंने एक चीनी राजकुमारी से शादी की लेकिन उन्हें तिब्बती संस्कृति को संरक्षित और मजबूत करने की भी चिंता थी। उन्होंने एक तिब्बती लिपि तैयार कराने की व्यवस्था की। इसी का नतीजा रहा था कि जब शांतरक्षित अगली शताब्दी में तिब्बत आए तो उन्होंने यह सुझाव दिया कि भारतीय बौद्ध साहित्य- बुद्ध के वचन और बाद के आचार्यों के ग्रंथों का तिब्बती में अनुवाद किया जाए।

परम पावन ने कहा कि उस साहित्य में निहित प्रवचनों का सार सुहृदय की साधना से संबंधित है।

उन्होंने स्वीकार किया, 'मैंने अपने जीवन में कई कठिनाइयों का सामना किया है, लेकिन ये कठिनाइयां कभी मेरे मन की शांति भंग नहीं कर पाईं।' मुझे लगता है कि अच्छे दिल का होना आपके स्वास्थ्य और खुशहाली के लिए अच्छा है, इस बारे में वैज्ञानिक जो कहते हैं, वह सच है। बोधिचित्त न केवल हमारे अपने लक्ष्यों को पूरा करता है, बल्कि यह दूसरों के लक्ष्यों को भी पूरा करता है। यदि आप इसका विकास दिन-रात कर सकते हैं, तो आपको निश्चित रूप से मानसिक शांति मिलेगी।

अभिषेक शुरू करते हुए परम पावन ने स्थानीय आत्माओं का अनुष्ठान में आह्वान करने के लिए एक एक अनुष्ठानिक केक भेंट किया। उन्होंने टेडैंग लिंग्पा के ऐसा करने के तरीके से सहमति जताते हुए बोधिसत्व प्रतिज्ञा दिलाई, जिसके बाद तांत्रिक प्रतिज्ञा की गई। इसके बाद उन्होंने मूल अभिषेक, परम अभिषेक, गुप्त और शब्द अभिषेक सहित कई अभिषेकों के माध्यम से मंडली का मार्गदर्शन किया। उन्हें पूरा करने के बाद उन्होंने आगे के अनुष्ठान के लिए आज्ञा प्रदान कीं। इसकी परिणति दूसरों को लाभ पहुंचाने की अनुमति के रूप में हुई। इसने वह प्रेरित हुए और शांतिदेव के 'बोधिसत्व मार्ग में प्रवेश' से कविता सुनाई, जो उनकी मूल भावना को व्यक्त करता है।

जब तक अंतरिक्ष है,
और जब तक भव्य प्राणी रहेंगे,
तब तक मैं भी रहूं
दुनिया के दुख को दूर करने में मदद करने के लिए।

परम पावन ने कहा, 'इस अभिषेक को धारण करने के बाद कृपया वैसा ही करें, जैसा प्रमुख देवता ने निर्देशन दी है।' इसका अर्थ है प्रतिज्ञाओं और प्रतिबद्धताओं

पर कायम रहना। चीनी शिष्यों ने परम पावन की लंबी उम्र के लिए अपने गुरुओं द्वारा रचित प्रार्थना का पाठ किया, जिसका चीनी भाषा में अनुवाद किया गया है।

अपने स्थान से उठते हुए परम पावन ने समर्पण के दो श्लोक पढ़े:

जैसे विद्वान मंजुश्री और समन्तभद्र ने
चीजों को वैसे ही महसूस किया जैसी वे हैं,
वैसे ही मैं भी इन सभी गुणों को सर्वोत्तम तरीके से समर्पित करता हूं
ताकि मैं उनके आदर्श उदाहरण का अनुसरण कर सकूं।
मैं पुण्य की इन सभी मूल तत्वों के प्रति समर्पित हूं
जिसका समर्पण के साथ सर्वश्रेष्ठ के रूप में प्रशंसा की गई है
तीनों काल में प्रकट हुए सभी बुद्धों द्वारा
ताकि मैं बोधिसत्व के महान कार्यों को कर सकूं।

◆ सिक्किम में बाढ़ से हानि पर परम पावन ने दुख जताते हुए मुख्यामंत्री को लिखा

dalailama.com, ०४ अक्तूबर, २०२३

धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। परम पावन दलाई लामा ने आज ०४ अक्तूबर को सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग को लिखे संवेदना पत्र में तीस्ता नदी घाटी में कल रात आई बाढ़ से सिक्किम में हुई जान-माल की हानि और संपत्ति के बड़े पैमाने पर हुए नुकसान को लेकर दुख व्यक्त किया।

उन्होंने लिखा, 'मैं उन परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं, जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। साथ ही इस आपदा से प्रभावित अन्य लोगों के कल्याण के लिए प्रार्थना करता हूं।'

उन्होंने लिखा, 'मैं इस आपदा से प्रभावित लोगों को तत्परता से राहत पहुंचाने के लिए राज्य सरकार और संबंधित अधिकारियों की सराहना करता हूं। सिक्किम के लोगों के साथ अपनी एकजुटता प्रकट करने के प्रतीक के रूप में मैंने दलाई लामा ट्रस्ट से राहत और बचाव प्रयासों के लिए दान देने को कहा है।'

परम पावन ने अपनी प्रार्थनाओं के साथ पत्र समाप्त किया।

◆ मैक्सिको की संसद ने सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की आधिकारिक मेजबानी की, तिब्बत के समर्थन में विज्ञप्ति जारी की

tibet.net, १२ अक्तूबर, २०२३

मेक्सिको सिटी। तिब्बत और तिब्बतियों के लिए उस समय विजयी क्षण आया, जब तिब्बती लोगों के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग का मंगलवार को मैक्सिको के संसद भवन में उपराष्ट्रपति डिप्टी कार्ला अल्माज़ान की गरिमामयी उपस्थिति में औपचारिक रूप से स्वागत किया गया और उन्हें स्वीकार किया गया।

यह घटना प्रतीक भर नहीं थी, बल्कि से उससे कहीं अधिक थी। सबसे बड़े संसदीय सदनों में से एक ५०० सांसदों वाले मैक्सिको की संसद में तिब्बती नेता की स्वीकार्यता ने तिब्बती मुद्दे और लोगों के साथ उनके समर्थन और एकजुटता के आह्वान को प्रतिध्वनित किया। यह तिब्बत के अंदर रहनेवाले तिब्बतियों की अविश्वसनीय भावना और उनकी अडिगता का प्रमाण भी है और छह दशकों से अधिक समय से हिंसक दमन का सामना करने में उनकी दृढ़ता को भी दर्शाता है।

मैक्सिको की संसद सत्र के दौरान संसद के डिप्टी साल्वाडोर कारो ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का परिचय दिया और मैक्सिको की उनकी पहली आधिकारिक यात्रा पर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। डिप्टी कारो ने तिब्बत मुद्दे के लिए उत्साहपूर्वक अटूट समर्थन व्यक्त किया, जो तिब्बत समर्थक देशों के सांसदों की सामूहिक आवाज का प्रतिनिधित्व करता है।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की सदन में प्रवेश से पहले एक और ऐतिहासिक क्षण तब आया, जब उपराष्ट्रपति जोआना एलेजांद्रा फेलिप टोरेस ने एक आधिकारिक विज्ञप्ति में तिब्बत के समर्थन को लेकर संसद के आधिकारिक रुख को मजबूत करनेवाली घोषणा की। यह मैक्सिको की संसद की ओर से अभूतपूर्व कार्यवाही थी।

विज्ञप्ति जारी करते हुए डिप्टी जोआना एलेजांद्रा फेलिप टोरेस ने तिब्बती सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के प्रति मेक्सिको की संसद की प्रतिबद्धता, विशेष रूप से तिब्बती बच्चों को अपनी भाषा और संस्कृति में सीखने और फलने-फूलने के अधिकारों को रेखांकित किया और इसकी वकालत की। उन्होंने तिब्बत के अंदर रहनेवाले तिब्बतियों की पीड़ाओं पर गहरी चिंता व्यक्त की और तिब्बती लोगों के प्रयासों और आकांक्षाओं का समर्थन करने के लिए संसद की ओर से पूरे दिल से समर्थन और सहयोग की बात दोहराई।

बैठक में उपस्थित अन्य प्रतिनिधियों में से डिप्टी चैपमैन मोरेनो ने मैक्सिको की राजधानी में सिक्योंग की व्यस्त यात्रा की सराहना की और आशा व्यक्त की कि उनकी यात्रा विश्व स्तर पर और भी अधिक करुणा और एकजुटता को प्रेरित करेगी। डिप्टी एल्विया योलान्डा मार्टिनेज कोसियो, डिप्टी मारिया एलेना लिमोन गार्सिया, डिप्टी जूलियट मेजिया इबनेज़, डिप्टी रोजा मारिया गोंजालेज अज़कराग और डिप्टी कोरिना विलेगास ने तिब्बत के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता को दोहराया और अन्य सदस्यों से भी तिब्बत मुद्दे के समर्थन में खड़े होने का आग्रह किया।

सांसदों को संबोधित करते हुए सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने संसदीय समूह से तिब्बती मुद्दे के प्रति अपनी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता सुनिश्चित करते हुए संसदीय समर्थन को संस्थागत बनाने और व्यवस्थित करने का आग्रह किया। उन्होंने लैटिन अमेरिका के प्रवेश द्वार के रूप में मेक्सिको की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और पूरे लैटिन अमेरिका में जागरुकता बढ़ाने और सार्थक समर्थन हासिल करने के लिए सक्रिय उपायों को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया।

उन्होंने लेजिस्लेटर्स फ्रेंड्स ऑफ तिब्बत के अध्यक्ष डिप्टी साल्वाडोर कारो की अडिग प्रतिबद्धता के लिए उनकी और मैक्सिको के अन्य तिब्बत समर्थक समूहों के साथ मैक्सिको में तिब्बत मुद्दे की वकालत करने के लिए 'कासा तिब्बत मैक्सिको' के टोनी करम के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता दोहराई।

सिक्योंग ने तिब्बतियों और लैटिन अमेरिकियों के बीच गहरे संबंधों को और मजबूत करने पर भी जोर दिया, जो परम पावन दलाई लामा की लैटिन अमेरिका की कई यात्राओं, विशेष रूप से मैक्सिको की उनकी चार यात्राओं के माध्यम से स्थापित हुआ है।

उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों, विशेष रूप से उपराष्ट्रपति कार्ला अल्माज़ान के प्रति गहरा आभार व्यक्त किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि उनके समर्थन का तिब्बत में तिब्बतियों और तिब्बती मुद्दे का समर्थन करनेवाले वैश्विक समुदाय पर गहरा प्रभाव पड़ेगा।

सिक्योंग ने अपने समापन भाषण में कहा, 'तिब्बत के अंदर रहनेवाले तिब्बती यहां आपकी उपस्थिति को देखेंगे और यह उनके और दुनिया भर में तिब्बत के दोस्तों के लिए प्रेरणा के गहरे स्रोत के रूप में काम करेगा।'

◆ साओ पाउलो की स्टेट असेंबली में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का स्वागत

tibet.net, ०३ अक्तूबर, २०२३

साओ पाउलो। तिब्बती लोगों द्वारा लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का ०३ अक्तूबर कोसाओ पाउलो असेंबली में गर्मजोशी से स्वागत किया गया। वहां के राष्ट्रपति आंद्रे डो प्राडो और उपराष्ट्रपति गिल डिनुज़ ने उनका स्वागत किया। यहां की असेंबली में अंतरराष्ट्रीय संबंध समिति के सदस्यों-पाउला फियोरिलो (वर्कर्स पार्टी) और रुई अल्वेस (रिपब्लिकन) समेत स्टेट असेंबली के सदस्यों ने भी सिक्योंग को साओ पाउलो असेंबली की पहली औपचारिक यात्रा पर बधाई दी।

सिक्योंग के साथ आए प्रतिनिधिमंडल में तिब्बत-ब्राजील कार्यालय के प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग, स्टेट असेंबली के पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान में लॉन्गविडेड एक्सपो+फोरम के अध्यक्ष वाल्टर फेल्डमैन, सैंड्रा फर्नांडिस एरिकसन, रंगज़ेन स्थित टीएचबी के अध्यक्ष लामा रिनचेन ख्येनराब, टीएचबी के मोविमेंटो तिब्बती लिवरे-ब्रासिल और डैनियल सेरमेंटो शामिल थे।

एक घंटे से अधिक समय तक चली बैठक के दौरान सिक्योंग ने तिब्बत की भू-राजनीतिक प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने इसके गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव और दुनिया भर में गूंजने वाले गंभीर पर्यावरणीय संकटों को संबोधित करने में इसकी अपरिहार्य भूमिका पर प्रकाश डाला।

सिक्योंग ने टिप्पणी की,'पश्चिमी लोग तिब्बत को दुनिया की छत कहते हैं। एशियाई देश तिब्बत को एशिया के जल मीनार के रूप में देखते हैं और चीनी शोधकर्ताओं सहित कई वैज्ञानिक अब तिब्बत को तीसरे ध्रुव के रूप में मानते हैं।' सिक्योंग ने इस तथ्य को भी रेखांकित किया कि तिब्बत न केवल एक राजनीतिक मुद्दा है बल्कि पूरी दुनिया के लिए पर्यावरणीय चिंता का विषय है। तीव्र जलवायु परिवर्तन के बारे में ब्राज़ील के प्रत्यक्ष अनुभव को ध्यान में रखते हुए सिक्योंग ने बताया कि ब्राज़ील वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन अनुभवों पर बोलने के लिए असाधारण रूप से बेहतर देश है। ब्राजील के अमेज़न के जंगलों में बार-बार लगने वाली आग से वहां की जलवायु स्थितियां काफी गंभीर है। उन्होंने अमेज़न वर्षावन और तिब्बती पठार दोनों के रणनीतिक महत्व पर जोर दिया और विशेष रूप से अमेज़न वर्षावन में जलवायु परिस्थितियों के तिब्बती पठार पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रत्यक्ष सह-संबंधों की ओर इशारा किया।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने स्टेट असेंबली के नेतृत्व से चीन और चीनी निवेश के संबंध में नीतिगत निर्णय सावधानी पूर्वक और जिम्मेदारी के साथ लेने की अपील की। उन्होंने चीनी नेतओं के साथ बातचीत करते समय वैश्विक पर्यावरण सुरक्षा की वकालत करने का आग्रह किया। इसके साथ ही उन्होंने मानवाधिकारों और स्वतंत्रता को बनाए रखने में ब्राजील जैसे लोकतांत्रिक देशों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

सिक्योंग ने इस बात पर भी जोर दिया कि कैसे राष्ट्रपति शी जिनपिंग की तिब्बत के चीनीकरण की नीति के तहत तिब्बत के अंदर की तिब्बती पहचान खत्म होने की कगार पर है। उन्होंने बताया कि तिब्बतियों की भावी पीढ़ियों का चीनीकरण करने की साजिश के तहत लगभग दस लाख तिब्बती बच्चों को सरकार द्वारा संचालित औपनिवेशिक आवासीय स्कूलों में जबरदस्ती भेजा जा रहा है। सिक्योंग ने तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'तिब्बत में कम से कम १५८ तिब्बतियों ने पिछले एक दशक से अधिक समय में आत्मदाह कर अपनी जान दे दी है। उन लोगों को इस बात की उम्मीद नहीं बची थी कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय उनके बचाव में आएगा।'

इसके साथ ही सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और डेप्युटीज़ को अपने भव्य स्वागत के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि उनका यह दौरा तिब्बत के अंदर रह रहे तिब्बतियों में 'आशा का शक्तिशाली संदेश' बनकर गूंजेगा।

असेंबली के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष ने जटिल और लंबे समय तक चले चीन-तिब्बत संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान के लिए पूरे दिल से समर्थन व्यक्त करते हुए सिक्योंग को उनकी पहली यात्रा के लिए बधाई दी। असेंबली के अध्यक्ष ने कहा कि जन प्रतिनिधियों की सभा के रूप में असेंबली शांति, बातचीत से समस्या का समाधान और सभी प्रकार के दमन को समाप्त करने की वकालत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सिक्योंग ने प्रतिउत्तर में आभार व्यक्त किया और स्टेट असेंबली नेतृत्व और उसके प्रतिनिधियों को धर्मशाला आने का निमंत्रण दिया।

बैठक के बाद सिक्योंग ने साओ पाउलो सिटी हॉल का दौरा किया और शहर के मानवाधिकार सचिव सोनिन्हा फ्रांसिन और जलवायु परिवर्तन के कार्यकारी सचिव गिल्बर्टो नतालिनी से मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने साओ पाउलो विश्वविद्यालय में भाषण दिया।

यह सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की ब्राज़ील की पहली औपचारिक यात्रा थी। लैटिन अमेरिका दौरे के तहत उनका अगला कार्यक्रम कोलंबिया और मैक्सिको जाने का है।

◆ सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का कोलंबिया राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में 'निर्वासन और विस्थापन: अंतःविषयक प्रतिबिंब' पर व्याख्यान

tibet.net, ०८ अक्तूबर, २०२३

बोगोटा। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने शुक्रवार को नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ कोलंबिया में 'एकजाइल्स एंड डिसप्लेसमेंट्स : इंटर डिसिप्लीनरी रिफ्लेक्शंस (निर्वासन और विस्थापन: अंतःविषय प्रतिबिंब)' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। इसके बाद उन्होंने यमंतका केंद्र का दौरा किया और इसके सदस्यों के साथ एक संक्षिप्त बैठक की।

राजधानी में अपने अंतिम कार्यक्रम में सिक्योंग ने एक अंतर-धार्मिक संवाद में भाग लिया, जिसमें विभिन्न आठ परंपराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिष्ठित धार्मिक प्रमुखों के साथ बातचीत की। इसमें कोलंबिया सरकार के आंतरिक मंत्रालय और जिला धार्मिक स्वतंत्रता कार्यालय, बोगोटा के एक-एक प्रतिनिधि शामिल थे। इस यात्रा में सिक्योंग के साथ तिब्बत-ब्राजील कार्यालय के प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग भी थे।

◆ चीन के साथ अपनी स्थिति के कारण लैटिन अमेरिका तिब्बती मुद्दे पर और अधिक मदद का प्रयास कर सकता है: मेक्सिको में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग

tibet.net, ११ अक्तूबर, २०२३

मेक्सिको। मेक्सिको के प्रमुख विश्वविद्यालयों में शामिल यूनिवर्सिडैड ऑटोनोमा मेट्रोपोलिटाना (यूएएम) में अपने व्याख्यान में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने कहा कि लैटिन अमेरिका तिब्बती मुद्दे को आगे बढ़ाने में अधिक मदद कर सकता है। ०९ अक्टुबर मंगलवार को विश्वविद्यालय में 'तिब्बत के अंदर की मौजूदा स्थिति' पर बोलने के लिए आमंत्रित किए गए सिक्योंग ने मेक्सिको को चीन का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी बताया। मेक्सिको में निर्वासित तिब्बतियों के लोकतांत्रिक रूप से चुने गए नेता के आधिकारिक कार्यक्रम जारी हैं। यहां उन्होंने देश के कुछ प्रभावशाली नेताओं और सांसदों से मुलाकात की।

मोनरो पार्टी का प्रतिनिधित्व करने वाले मैक्सिकन चैंबर ऑफ डेप्युटीज़ के एक प्रतिष्ठित सदस्य डिप्टी मैनुअल गुइलेर्मो चैपमैन मोनरो ने मंगलवार ०९ अक्तूबर की सुबह नाश्ते पर सिक्योंग पेन्पा छेरिंग का सम्मान किया। डिप्टी साल्वाडोर कारो और डिप्टी चैपमैन का प्रतिनिधिमंडल भी बैठक में शामिल हुआ।

डिप्टी चैपमैन के निमंत्रण पर सिक्योंग ने ट्रिलास पब्लिशिंग हाउस और कासा लैम सांस्कृतिक केंद्रों का विशेष दौरा किया। शाम को सिक्योंग तिब्बत हाउस के छात्रों के साथ एक मार्मिक चर्चा में शामिल हुए जहां उन्होंने 'द दलाई लामाज रिइनकार्नेशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन रिलिजियस फ्रीडम: ए केस स्टडी ऑफ तिब्बत-चीन रिलेशंस (दलाई लामा का पुनर्जन्म और धार्मिक स्वतंत्रता पर इसका प्रभाव: तिब्बत-चीन संबंधों के संदर्भ में)' विषय पर अपनी बात रखी।

इसके एक दिन पहले सोमवार को सिक्योंग ने हाउस ऑफ तिब्बत-मेक्सिको में तिब्बत के लंबे समय के मित्रों और कासा तिब्बत मैक्सिको, इंटरनेशनल तिब्बत नेटवर्क (आईटीएन), तिब्बत एमएक्स और वोसेस डी तिब्बत सहित प्रमुख तिब्बत समर्थक समूहों के साथ रणनीतिक बैठक की। बैठक की अध्यक्षता सिक्योंग, डिप्टी साल्वाडोर कारो कैबरेरा और प्रतिनिधि जिग्मे छेरिंग ने की। बैठक में मेक्सिको पर विशेष ध्यान देने के साथ लैटिन अमेरिका में तिब्बत की पक्षधरता को पुनर्जीवित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

बैठक के बाद मैक्सिकन चैंबर ऑफ डेप्युटीज़ की सम्मानित सदस्य डिप्टी मारिया टेरेसा ओचोआ मेजिया ने सिक्योंग पेन्पा छेरिंग की मेक्सिको की पहली यात्रा को यादगार बनाने के लिए मैक्सिकन सोप्रानो द्वारा मेक्सिको लाइब्रेरी में आयोजित संगीत कार्यक्रम में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग को आमंत्रित किया।

◆ धार्मिक आयोजन के लिए चंदा इकट्ठा करने वाले आठ तिब्बतियों को हिरासत में लिया गया

tibetwatch.org, ०५ अक्तूबर, २०२३

दारलाक काउंटी पुलिस ने हिरासत में लिए गए समूह के बारे में जानकारी देनेवाले को पुरस्कार देने की घोषणा की, नोटिस जारी किया।

-तिब्बत वॉच

दारलाक काउंटी पुलिस ने आठ तिब्बतियों को 'आपराधिक संगठन बनाने', 'झगड़ा कर समस्या पैदा करने' और 'जबरन वसूली और ब्लैकमेल' के आरोप में २० अक्तूबर को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया।

हिरासत की जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने तिब्बत वॉच को बताया कि उन पर धार्मिक कार्यक्रम के लिए चंदा इकट्ठा करने का आरोप लगाया गया है।

काउंटी पुलिस ने भी उसी दिन अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक नोटिस जारी किया, जिसमें स्थानीय तिब्बतियों से इन आरोपियों और अन्य 'आपराधिक संगठनों' से संबंधित लोगों का सुराग बताने और जल्द से जल्द रिपोर्ट देने का आग्रह किया गया है। इसमें कहा गया कि उन्हें 'इसके एवज में मोटा पुरुस्कार दिया जाएगा'। जबकि उनके बारे में जानकारी छुपानेवाले लोगों को कड़ी सजा की चेतावनी दी गई है।

हिरासत में लिए गए लोगों में गोनम, गोंटसे, जिग्मे तेनज़िन, पाल्डेन, लोचो, नामगेल, नोर्ब्यू और कलसांग शामिल हैं। ये सब किंघई प्रांत के गोलोग तिब्बती स्वायत्त फ्रेक्चर के दारलाक काउंटी के ग्यिम टाउनशिप के निवासी हैं।

◆ यूरोपीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने कालोन नोरज़िन डोल्मा से मुलाकात कर तिब्बत से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की

tibet.net, ०५ अक्तूबर, २०२३

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) के कालोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा ने ०५ अक्तूबर को अपने विभाग में यूरोपीय संसद और दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय कार्यालय फ्रेडरिक नौमान फाउंडेशन फॉर फ्रीडम (एफएनएफ) के प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया।

यूरोपीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल में ऑस्ट्रियाई संसद सदस्य यानिक शेट्टी, ऑस्ट्रिया की वियना असेंबली के सदस्य डोलोरेस बाकोस,जर्मनी की थुरिंगिया स्टेट पार्लियमेंट के डिप्टी स्पीकर डिर्क बर्गनर, जर्मनी के जेना नगर निगम के विभागाध्यक्ष रेजिना बर्गनर, जर्मनी के एफडीपी बुंडेस्टाग समूह के संसदीय दल के नेता टॉर्स्टन हर्बस्ट, जर्मन सांसद सैंड्रा वीसर, क्रिस्टीन एशेनबर्ग-डुग्रस और ओलाफ इन डेर बीक शामिल थे।

फ्रेडरिक नौमैन फाउंडेशन (एफएनएफ) के प्रतिनिधिमंडल में एफएनएफ दक्षिण एशिया के प्रमुख डॉ. कार्स्टन क्लेन, एफएनएफ दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय परियोजना प्रबंधक फ्रैंक हॉफमैन, एफएनएफ दक्षिण एशिया के वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक नूपुर हसीजा, एफएनएफ दक्षिण एशिया के क्षेत्रीय कार्यक्रम और संचार प्रबंधक हिमांशु चावला, एफएनएफ दक्षिण एशिया के कार्यक्रम और संचार अधिकारी तेनज़िन पलजोर, एफएनएफ इंटर्न अलेक्जेंडर डूप और जर्मनी में एफएनएफ के विकास सहयोग और परियोजनाओं के सलाहकार यानिक मेफ़र्ट शामिल थे। एफएनएफ प्रतिनिधिमंडल के साथ सीटीए के वित्त विभाग के सामाजिक और संसाधन विकास कोष (एसएआरडी) से तेनज़िन नोरसांग भी थे।

एक घंटे तक चली बैठक के दौरान कालोन नोरज़िन डोल्मा ने प्रतिनिधियों को तिब्बत के अंदर

की गंभीर स्थिति, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की वर्तमान स्थिति, तिब्बत के संबंध में अंतरराष्ट्रीय संबंधों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से तिब्बत की अपेक्षाओं से अवगत कराया। उन्होंने तिब्बती मुद्दे की प्रासंगिकता का श्रेय परम पावन दलाई लामा के नैतिक नेतृत्व, तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के लचीलेपन, निर्वासित तिब्बतियों के प्रयासों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समर्थन को दिया। इसके अलावा कालोन ने तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति पर प्रकाश डाला और चीन सरकार द्वारा लागू की गई कठोर नीतियों को रेखांकित किया। इनमें धार्मिक अधिकारों और स्वतंत्रता को कम करना और मठों को निशाना बनाना प्रमुख हैं। चीन सरकार तिब्बती मठों को अपनी हालिया नीति के खिलाफ 'बगावत का अड्डा' मानती है। इस नीति के तहत चीन की कम्युनिस्ट सरकार तिब्बती बच्चों को औपनिवेशिक शैली के आवासीय स्कूलों में जबरन प्रवेश कराती है और बच्चों को संशोधित बनावटी इतिहास की शिक्षा चीनी भाषा में दे रही है। उन्होंने मध्यम-मार्ग नीति के तहत चीन-तिब्बत संघर्ष के समाधान की मांग करने के लिए सीटीए के प्रतिबद्ध रुख की पुष्टि करते हुए कहा कि यह चीनी सरकार और तिब्बती लोगों-दोनों की मूलभूत चिंताओं को दूर करनेवाली नीति है।

कालोन ने परम पावन दलाई लामा और तिब्बती समुदाय को निवास के लिए जगह देने और तिब्बती पहचान के संरक्षण में मानवीय सहायता प्रदान करने के लिए भारत सरकार और यहां के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। इसी तरह उन्होंने अमेरिकी सरकार द्वारा तिब्बतियों को वित्तीय सहायता और समर्थन करने वाले कानूनों के रूप में राजनीतिक सहायता के प्रति आभार जताया। इसके साथ ही कालोन ने तिब्बत मुद्दे पर यूरोपीय देशों के समर्थन को याद किया। इसके अलावा, उन्होंने पूर्वी तुर्केस्तान, इनर मंगोलिया, ताइवान, हांगकांग सहित उत्पीड़ित समूहों के साथ गठबंधन बनाने के सीटीए के प्रयासों पर प्रकाश डाला और बताया कि उसका परम उद्देश्य दुनिया भर के उत्पीड़ित समूहों का गठबंधन बनाना है।

बैठक में डीआईआईआर के सचिव कर्मा चोयिंग और सूचना विभाग के अतिरिक्त सचिव नामग्याल छेवांग भी उपस्थित थे।

◆ अमेरिकी सत्ता केंद्र कैपिटोल हिल मे परम पावन दलाई लामा को अमेरिकी कांग्रेस के स्वर्ण पदक दिए जाने की १६वीं वर्षगांठ मनाई गई

tibet.net, १८ अक्तूबर, २०२३

वाशिंगटन डीसी। अमेरिकी कांग्रेस द्वारा परम पावन १४वें दलाई लामा को स्वर्ण पदक से सम्मानित किए जाने की १६वीं वर्षगांठ १८ अक्तूबर को वाशिंगटन डीसी के कैपिटोल हिल में मनाई गई। समारोह में अमेरिका के कुछ उच्चस्तरीय अधिकारियों और सांसदों ने भाग लिया। समारोह में स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी, कांग्रेस सदस्य जिम मैकगवर्न और क्रिस स्मिथ, कांग्रेस की महिला सदस्य बेट्टी मैक्कलम और जान शाकोव्स्की जैसे परम पावन और तिब्बत के घनिष्ट मित्र भी शामिल हुए।

समारोह में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत के अध्यक्ष रिचर्ड गेरे, आईसीटी अध्यक्ष तेनचो ग्यात्सो, सीटीए के पूर्व कालोन तेनज़िन नामग्याल टेथोंग और विदेश विभाग के कर्मचारियों के साथ-साथ यूएसएआईडी कर्मचारी भी उपस्थित थे।

स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी ने परम पावन को सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिए जाने को 'गर्व का विषय' बताया और 'न केवल परम पावन के प्रति, बल्कि तिब्बत के हित के लिए भी लोगों को आकर्षित करने के लिए' अथक प्रयास करने के लिए आईसीटी अध्यक्ष रिचर्ड गेरे की सराहना की। इस पर गेरे ने भी अपनी अनंत कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने परम पावन दलाई लामा के प्रति अमेरिका के दोनों दलों के सांसदों के समर्थन पर भी जोर दिया।

परम पावन दलाई लामा और तिब्बत के मुद्दे के प्रति द्विदलीय समर्थन को दोहराते हुए कांग्रेस सदस्य क्रिस स्मिथ ने सभी राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठते हुए परम पावन के जबरदस्त प्रभाव की सराहना की। उन्होंने तिब्बत मुद्दे की पक्षधरता के लिए आईसीटी अध्यक्ष की भी प्रशंसा की और तिब्बत के मुद्दे को बहुत लाभ पहुंचाने का श्रेय उनकी 'अत्यधिक प्रेरक शक्ति' को दिया।

कांग्रेसी जिम मैकगवर्न ने परम पावन के युद्ध-विरोधी रुख के लिए उनके प्रति प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने चीन-तिब्बत संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान के लिए दलाई लामा के साथ जुड़ने के लिए चीन पर दबाव डाला।

कांग्रेस की महिला सांसद बेट्टी मैक्कलम ने तिब्बत के हित के प्रति प्रतिबद्धता के लिए आईसीटी अध्यक्ष को धन्यवाद दिया और हर जगह मानवाधिकारों पक्ष में बोलने के लिए उनसे आग्रह किया।

बेट्टी ने कहा कि तिब्बत में जो चल रहा है उसके बारे में हम आंखें बंद नहीं रख सकती हैं। उन्होंने इस महत्वपूर्ण समारोह में आमंत्रित करने के लिए तिब्बती समुदाय को धन्यवाद दिया।

कांग्रेस की महिला सांसद जान शाकोव्स्की ने जीवन के एक कठिन समय के दौरान परम पावन से मुलाकात का अपना एक स्मरण सुनाया। तब उन्होंने अपने परिवार के एक सदस्य को खो दिया था। उसने गहरी कृतज्ञता के साथ अपना अनुभव सुनाया।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अपने मुख्य भाषण में परम पावन को इतने महत्वपूर्ण पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए अमेरिकी कांग्रेस के प्रति आभार व्यक्त किया।

निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग ने कहा, 'यह पुरस्कार तिब्बत के अंदर पीड़ित तिब्बतियों के लिए एक बड़ा सम्मान है, क्योंकि यह ६४ वर्षों के चीनी दमन के बाद भी उनकी अदम्य भावना को बनाए रखने के साहस का प्रतीक है।'

इसके बाद उन्होंने लैटिन अमेरिका की अपनी हालिया यात्राओं, राजनीतिक रूप से केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की नई सीमाओं और उत्तरी अमेरिका के बारे में संक्षेप में जानकारी दी, जहां वह तिब्बत के लिए पक्षधरता अभियान जारी रखे हुए हैं। इसके अलावा, उन्होंने सभा को परम पावन दलाई लामा के अच्छे स्वास्थ्य के प्रति आश्वस्त किया।

आईसीटी अध्यक्ष रिचर्ड गेरे ने उस ऐतिहासिक क्षण का स्मरण किया, जब परम पावन दलाई लामा को अमेरिकी कांग्रेस का स्वर्ण पदक प्रदान किया गया था।

उन्होंने कहा, 'मुझे इस बात से बहुत गर्व महसूस हुआ कि अमेरिकी प्रयोग दलाई लामा को हमारे लोकतंत्र के देवताओं की श्रेणी में शामिल कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह पुरस्कार हमें मिल रहा हो। उन्होंने हमें और इस अमेरिकी प्रयोग को अपने दिल में समा लिया।'

उन्होंने इस महत्वपूर्ण अवसर का श्रेय उपस्थित लोगों के कार्यों और प्रेरणाओं को शुद्ध और ताज़ा करने को भी दिया। अंत में उन्होंने परिस्थितियों की चुनौतियों पर काबू पाने और अपने पद पर खरा उतरने के लिए

आध्यात्मिक नेता की प्रशंसा की।
स्थानीय तिब्बती समुदाय द्वारा परम पावन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए एक तिब्बती गीत के गायन के साथ समारोह का समापन हुआ।

◆ बाइडेन कैबिनेट के सदस्यों से तिब्बत में डीएनए संग्रह, परिवार अलगाव के खिलाफ कार्रवाई का आग्रह

Savetibet.org, २६ अक्तूबर, २०२३

चीन पर कांग्रेस-कार्यकारी आयोग (सीईसीसी) के अध्यक्षों ने बाइडेन प्रशासन के तीन कैबिनेट सदस्यों को पत्र लिखकर चीन सरकार द्वारा तिब्बत में बड़े पैमाने पर बायोमेट्रिक डेटा संग्रह और पारिवारिक अलगाव कराने पर वैश्विक मैग्निट्स्की प्रतिबंधों सहित संभावित कार्रवाई का आग्रह किया है।
वाणिज्य मंत्री जीना रायमोंडो, वित्त मंत्री जेनेट येलेन और विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन को लिखे अपने पत्र में प्रतिनिधि क्रिस स्मिथ, आर-एनजेऔर सेन जेफ मर्कलेडी-वॉश ने तीनों नेताओं से तिब्बत में राजनीतिक पहचान और नस्लीय प्रोफाइलिंग पर नियंत्रण के लिए बायोमेट्रिक डेटा एकत्र करने के लिए चीन के सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो और तिब्बत में अन्य संस्थाओं द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के लिए कहा है।
आयोग के अध्यक्ष स्मिथ और सह-अध्यक्ष मर्कले ने पत्र में लिखा है, 'चूंकि आप सब लोग 'एंड-यूजर रिव्यू कमेटी में भूमिका निभाते हैं, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप अपनी उद्योग और सुरक्षा ब्यूरो की स्थायी सूची में (तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र) सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो और बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह परियोजना से संबद्ध हरेक संस्थाओं को शामिल कर लें। इससे यह सुनिश्चित होगा कि अमेरिकी कंपनियां टीएआर या अन्य तिब्बती क्षेत्रों में बायोमेट्रिक आईडी निगरानी क्षमताओं के संग्रह और निर्माण में योगदान नहीं दे पाएंगी और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसमें शामिल नहीं होंगी।'
पत्र में कहा गया है कि मंत्रीगण अपनी कार्रवाई में 'बड़े पैमाने पर बायोमेट्रिक डेटा संग्रह में मिलीभगत और तिब्बती बच्चों को उनके माता-पिता से जबरन अलग करने के लिए तिब्बती क्षेत्रों में अधिकारियों के लिए वैश्विक मैग्निट्स्की प्रतिबंध या वीज़ा प्रतिबंध को भी शामिल कर सकते हैं।'
इंटरनेशनल कंपेन फॉर तिब्बत के अध्यक्ष तेनचो ग्यात्सो ने कहा, 'सीईसीसी अध्यक्षों ने तिब्बत में बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह और तिब्बती बच्चों को उनके परिवारों से अकारण अलग करने के लिए चीनी अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराने के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का आह्वान किया है। हम मंत्रिगण- रायमोंडो, येलेन और ब्लिंकन से आग्रह करते हैं कि वे सीईसीसी अध्यक्षों के संदेश पर ध्यान दें और चीन के दुर्व्यवहारों में अमेरिकी व्यापारिक सहभागिता को सीमित करने और तिब्बती लोगों के अधिकारों के लिए खड़े होने के लिए उपरोक्त कदम उठाएं।'

बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह

पत्र में कहा गया है, 'कांग्रेस में चली सुनवाई और हमारी जांच से यह स्पष्ट है कि तिब्बत में कम से कम पिछले छह वर्षों से डीएनए और अन्य बायोमेट्रिक डेटा का बड़े पैमाने पर संग्रह हो रहा है।'
सिटीजन लैब ने सितंबर- २०२२ में बताया कि चीन की पुलिस ने पिछले छह वर्षों में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (जो तिब्बत के लगभग आधे हिस्से तक फैला है) में लगभग ९,२०,००० से १२ लाख तक लोगों के डीएनए नमूने एकत्र किए होंगे। ये आंकड़े क्षेत्र की कुल आबादी का एक-चौथाई से एक-तिहाई तक के हैं।
सितंबर- २०२२ में ही ह्यूमन राइट्स वॉच ने कहा कि चीन के अधिकारी टीएआर के निवासियों से व्यवस्थित रूप से डीएनए एकत्र कर रहे हैं, जिसमें पांच वर्ष तक के बच्चों से भी उनके माता-पिता की सहमति के बिना रक्त का नमूना लिया जा रहा है।
इस साल की शुरुआत में ब्लिंकन ने कहा था कि वह 'तिब्बती आबादी पर नियंत्रण और निगरानी के एक अतिरिक्त तरीके के तौर पर तिब्बत में बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह के प्रसार की रिपोर्टों से चिंतित हैं।'
सीईसीसी अध्यक्षों के पत्र में कहा गया है, 'तिब्बतियों का इस पर कोई नियंत्रण नहीं है कि उनके (रक्त) के नमूने कैसे एकत्र किए गए, संग्रहीत किए गए और उपयोग किए गए। न ही वे अपने और अपने खानदान के डीएनए संग्रह के संभावित दुष्प्रभावों के बारे में जानते हैं।'
पत्र में कहा गया है, 'इन परिस्थितियों पर आपकी ओर से मजबूत प्रतिक्रिया होनी चाहिए।'

अमेरिकी कंपनियां

पत्र में कहा गया है कि मैसाचुसेट्स स्थित थर्मो फिशर साइंटिफिक कंपनी ने टीएआर में पुलिस को डीएनए सीक्वेंसर के लिए अपने डीएनए किट और प्रतिस्थापन हिस्से बेचे हैं।
पत्र में कहा गया है, 'थर्मो फिशर दावे के साथ यह विश्वास नहीं कर सकती है कि उसके उत्पादों का इस्तेमाल केवल पुलिस के अपने कार्यों के लिए किया जा रहा है। पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) में डीएनए और अन्य संवेदनशील बायोमेट्रिक डेटा एकत्र और उपयोग करने प्रवृत्ति को देखते हुए है कहा जा सकता है कि इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए निगरानी के बहुत कम उपाय हैं। हमारी चिंता है कि बायोमेट्रिक संग्रह और विश्लेषण उपकरण- जबरन मानव अंगों को शरीर से निकाल लेने से लेकर व्यक्ति की बड़े पैमाने पर निगरानी करने में इस्तेमाल किए जा सकते हैं और ये मानवाधिकारों के घोर उल्लंघन को तेज कर सकते हैं।'
पत्र में कहा गया है कि मंत्रियों को 'यह सुनिश्चित करने के लिए कांग्रेस के साथ काम करना चाहिए कि प्रौद्योगिकी की भविष्य में पीआरसी में तैनाती और बायोमेट्रिक आईडी निगरानी के प्रबंधन के लिए के निर्यात को रोकने और नियंत्रित करने के पुख्ता इंतजाम कर लिए गए हैं।'

तिब्बती बच्चों का जबरन अलगाव

चीन ने ६० वर्षों से अधिक समय से तिब्बत पर बेरहमी से कब्जा कर रखा है। निगरानी समूह फ्रीडम हाउस के अनुसार, इस कारण यह दक्षिण सूडान और सीरिया के साथ पृथ्वी पर सबसे कम आजादी वाला देश बन गया है।
मानवाधिकारों के हालिया हनन के सबसे जघन्य उदाहरणों में से एक में चीनी सरकार ने सरकारी आवासीय स्कूलों में १० लाख से अधिक तिब्बती बच्चों को उनके परिवारों से अलग कर रख दिया है। यहां उन्हें धर्म, भाषा और संस्कृति से काट दिया गया है।
अगस्त में ब्लिंकन ने आवासीय स्कूल कार्यक्रम को चलानेवाले चीनी अधिकारियों पर वीज़ा प्रतिबंधों की घोषणा करते हुए कहा कि चीन की 'जबरन वाली नीतियां तिब्बत की युवा पीढ़ियों के बीच तिब्बत की विशिष्ट भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को खत्म करना चाहती हैं।'

सीईसीसी अध्यक्षों ने अपने पत्र में बच्चों को उनके परिवारों से अलग करने और तिब्बती लोगों के साथ अन्य दुर्व्यवहारों के लिए जिम्मेदार चीनी अधिकारियों पर वैश्विक मैग्निट्स्की प्रतिबंधों को लागू करने का सुझाव दिया है।

पत्र में कहा गया है, 'जिन अधिकारियों पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए उनकी सूची संभवतः बहुत लंबी है। क्योंकि तिब्बती लोग दशकों से लगातार और कभी-कभी क्रूर, दमन और सामाजिक नियंत्रण के अभियानों का शिकार होते रहे हैं। लेकिन हम प्रशासन से स्पष्ट रुख अपनाने के लिए कहते हैं कि जो लोग तिब्बतियों के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अधिकारों का घोर दुरुपयोग करते हैं, उन्हें अमेरिका या इसकी वित्तीय प्रणाली तक पहुंच का लाभ नहीं मिलना चाहिए।'

◆ सीसीपी को लेकर गठित हाउस सेलेक्ट कमेटी ने चीन-तिब्बत वार्ता को शांतिपूर्ण ढंग से बहाल करने का आह्वान करते हुए वक्तव्य जारी किया

tibet.net, १९ अक्तूबर, २०२३

वाशिंगटन। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) पर गठित हाउस सेलेक्ट कमेटी के अध्यक्ष माइक गैलाघेर और रैंकिंग सदस्य राजा कृष्णमूर्ति ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग और आईसीटी अध्यक्ष रिचर्ड गेरे के साथ बैठक के बाद बुधवार १८ अक्तूबर को संयुक्त बयान जारी कर चीन-तिब्बत संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान का आह्वान किया।

बयान में कहा गया है, 'पिछले कुछ वर्षों में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के हाथों तिब्बतियों के मानवाधिकारों का भयावह हनन किया गया है। इनमें यातना, मनमाने ढंग से गिरफ्तारी या हिरासत में लेना, देश के बाहर के व्यक्तियों से संपर्क रखने के कारण दमन और तिब्बतियों की स्वतंत्रता, स्वायत्तता और बुनियादी अधिकारों पर अन्य गंभीर प्रतिबंध शामिल हैं। हाल के महीनों में शी जिनपिंग ने तिब्बती अधिकारों पर दमनात्मक कार्रवाई को तेज कर दिया है। शी ने दलाई लामा की उत्तराधिकार प्रक्रिया में हस्तक्षेप किया है, तिब्बतियों का बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह कराया है और उनकी निगरानी बढ़ा दी है। आज हम तिब्बती लोगों के समर्थन में एकजुट हैं और सीसीपी से तिब्बत पर कब्जा खत्म करने का आह्वान करते हैं। सभी तिब्बतियों को प्रतिशोध के डर के बिना शांतिपूर्वक अपनी बात कहने का अधिकार होना चाहिए और हम तिब्बत पर सीसीपी के क्रूर दमन का शांतिपूर्ण समाधान खोजने के लिए श्री रिचर्ड गेरे और सिक्योंग (राष्ट्रपति) पेन्पा छेरिंग जैसे प्रमुख शुभचिंतकों के साथ काम करने के लिए तत्पर हैं।

◆ ऑस्ट्रिया और जर्मनी से आए यूरोपीय सांसदों ने अपनी संसदों में चीन-तिब्बत संघर्ष पर प्रस्ताव पेश करने को लेकर चर्चा करने का आश्वासन दिया

tibet.net, ०६ अक्तूबर, २०२३

धर्मशाला। धर्मशाला की दो दिवसीय यात्रा पर आए ऑस्ट्रिया और जर्मनी के सात सांसदों के यूरोपीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती लोगों और उनके आंदोलन के प्रति अपनी एकजुटता और समर्थन प्रदर्शित करने के लिए ०६ अक्तूबर को तिब्बती समाचार मीडिया के साथ एक प्रेस बैठक की।

प्रतिनिधिमंडल की यह धर्मशाला यात्रा फ्रेडरिक नौमन फाउंडेशन (एफएनएफ) द्वारा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के साथ साझेदारी में आयोजित दक्षिण एशिया के शैक्षिक दौरे का हिस्सा है। निर्वासन में तिब्बती प्रशासन के मुख्यालय की उनकी यात्रा और यूरोपीय प्रतिनिधिमंडल की तिब्बती सांसदों सहित सीटीए के नेतृत्व के बीच हुईं लगातार बैठकें सीटीए के साथ उनके मजबूत रिश्ते को और मजबूत करने के लिए यूरोपीय संसद द्वारा एक प्रगतिशील कदम का संकेत देती हैं।

ऑस्ट्रेलियाई संसद के सदस्य रिप्रेजेंटेटिव यानिक शेट्टी, ऑस्ट्रिया की वियना असेंबली के सदस्य डोलोरेस बाकोस, जर्मनी की थुरिंगिया असेंबली के डिप्टी स्पीकर डिर्क बर्गनर, जर्मनी के जेना नगर निगम के विभाग प्रमुख रेजिना बर्गनर, जर्मनी के एफडीपी बुंडेस्टाग समूह के संसदीय नेता टॉर्स्टन हर्बस्ट, जर्मन सांसद सैंड्रा वीसर, क्रिस्टीन एशेनबर्ग-डुग्नस ने एकमत होकर कहा कि निर्वासन में तिब्बती प्रशासन द्वारा अपनाई और कार्यान्वित की गई लोकतंत्र की प्रणाली को प्रत्यक्ष रूप से देखकर वे बहुत प्रेरित हुए। उन्होंने तिब्बत मुक्ति साधना में आशा, विश्वास और न्याय की भावना का संयोजन होने की बात कही।

जब चीन-तिब्बत संघर्ष को लेकर अमेरिका में पारित कानूनों की तरह के कानून यूरोपीय संसदों द्वारा पारित करने की संभावना के बारे में सवाल किया गया तो ऑस्ट्रिया और जर्मनी दोनों के संसदीय प्रतिनिधिमंडलों ने इस बात से सहमति जताई कि हालांकि वे इस तरह के कानूनों को पारित करने में अमेरिका की तरह प्रगतिशील नहीं रहे, लेकिन इस मामले को चर्चा के लिए अपनी-अपनी संसदों में जरूर उठाएंगे।

प्रतिनिधिमंडल सीटीए के अलावा, प्रवासी तिब्बती समुदाय और तिब्बती हित के लिए संघर्ष करनेवालों की गहरी समझ हासिल करने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और धर्म के क्षेत्र में सक्रिय विभिन्न तिब्बती संगठनों और नागरिक समाज समूहों का दौरा करने जा रहा है।

धर्मशाला यात्रा से पहले प्रतिनिधिमंडल ने ३० सितंबर को नई दिल्ली में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग से मुलाकात की और निर्वासित तिब्बतियों के सामने आने वाली चुनौतियों सहित विभिन्न मामलों पर चर्चा की। सिक्योंग ने उन्हें सीटीए के शासन ढांचे से अवगत कराया और इस बीच उनके समर्थन के लिए यूरोपीय प्रतिनिधिमंडल का आभार व्यक्त किया।

धर्मशाला में यूरोपीय प्रतिनिधिमंडल ने सीटीए के कैबिनेट मंत्रियों, तिब्बती संसद के स्पीकर, डुप्टी स्पीकर और सीटीए के वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की।

◆ चीन के तहत क्षेत्रों में मानवाधिकारों की गिरावट पर चर्चा के लिए जिनेवा फोरम-२०२३ शुरू

tibet.net, २६ अक्तूबर, २०२३

धर्मशाला। सीटीए के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) और तिब्बत ब्यूरो जिनेवा ने चीन के कब्जे में आनेवाले क्षेत्रों में मानवाधिकारों की गिरावट पर चर्चा के लिए २६ अक्तूबर को संयुक्त रूप से 'जिनेवा फोरम-२०२३' का आयोजन किया।

दो दिवसीय फोरम के उद्घाटन समारोह को लिथुआनिया के संसद सदस्य माननीय अरुणास वालिंस्कास, स्विट्जरलैंड के माननीय संसद सदस्य निकोलस वाल्डर और आयोजन विभाग से

माननीय कालोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा ने ऑनलाइन माध्यम से संबोधित किया।

फोरम के उद्घाटन समारोह में प्रतिनिधि रिगज़िन चोएडन जेनखांग (ब्यूरो डु तिब्बत, ब्रुसेल्स), डीआईआईआर के अतिरिक्त सचिव तेनज़िन लेक्शी के साथ मानवाधिकार विशेषज्ञों, वकीलों, शिक्षाविदों, कार्यकर्ताओं, सरकारों, राजनयिकों, थिंक टैंक, नागरिक समाज समूहों और यूरोप के वी-टैग के सदस्यों सहित अन्य विशिष्ट जनों ने शिरकत की।

सभी उपस्थित लोगों के प्रति गहरा आभार प्रकट करते हुए कालोन नोरज़िन डोल्मा ने कहा, 'इस समय तिब्बत, ताइवान, हांगकांग, पूर्वी तुर्केस्तान, मंचूरिया, इनर मंगोलिया और कई अन्य क्षेत्रों में प्रतिरोध की आवाजें मजबूत हो रही हैं। इन क्षेत्रों में पीआरसी सरकार अपनी विश्वसनीयता और वैधता को कायम रखने के संकट से जूझ रही है।' उन क्षेत्रों में आंदोलन और कार्यकर्ता अभी भी अलग-अलग रूपों और अलग-अलग स्तरों पर मौजूद हैं। इन उत्पीड़ित समूहों के प्रति चीन की नीतियां यथास्थिति बनाए रखनेवाली ही रही है। चीन जैसे अधिनायकवादी शासन से इसी तरह की प्रतिक्रिया अपेक्षित भी थी। इसका मतलब है कि यह असहमति की आवाजों को कुचल रहा है और सार्वजनिक अभिव्यक्ति के हर माध्यम पर एकाधिकार जमा रहा है। यह नीति सीसीपी की आधिकारिक स्थिति, शासन और नीतियों के विपरीत है। यह सीसीपी के संविधान और कानूनों का भी अनुपालन नहीं कर रहा है। इसलिए, चीन में मानवाधिकारों का उल्लंघन असल में उसकी वैधता सहित सभी तरह के संकटों का लक्षण है।

फोरम के दौरान जमीनी हकीकत की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रतिभागियों द्वारा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के अधिकार क्षेत्रों में चीनीकरण करने की नीति और चीन की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आक्रामकता सहित पीआरसी के अधिकार क्षेत्रों में मानवाधिकार स्थितियों में गिरावट की स्थिति से संबंधित विषयों की शृंखला पर चर्चा की जाएगी।

जिनेवा फोरम की कल्पना चीन के यूनिवर्सल पीरियोडिक रिव्यू (यूपीआर) के तीसरे चक्र की पृष्ठभूमि में की गई थी। पहला जिनेवा फोरम ०२ नवंबर २०१८ को आयोजित किया गया था। इस पर जबरदस्त उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिलने के बाद एक दिवसीय फोरम दो दिवसीय कार्यक्रम में बदल गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि केंद्रीय विषय से संबंधित सभी प्रमुख मुद्दों पर व्यापक रूप से चर्चा और विचार-विमर्श किया जा सके।

फोरम के विषय संबंधी पैनल में चीन के निम्न अधिकारों से संबंधित रिकॉर्ड पर भी चर्चा और समीक्षा की जाएगी

१. मानवाधिकार रुझान: चीन के अधीन क्षेत्रों में स्थिति

२. अभिव्यक्ति की आवाजों को खामोश करना: चीन की आत्मसात करने की नीति और इसके पक्षकारों पर कार्रवाई

३. तिब्बत और चीन के अधीन क्षेत्रों में विकास या नव-उपनिवेशीकरण?

४. चीन के वैश्विक अभियान: निगरानी और अंतरराष्ट्रीय दमन

जिनेवा फोरम को अपेक्षा है कि चीन में मानवाधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता पर ध्यान केंद्रित करने वाले संगठनों और विशेषज्ञों का एक नेटवर्क बनेगा और चीन के मानवाधिकार रिकॉर्ड को चुनौती देने और सुधारने के लिए समन्वित प्रयास विकसित कर लिया जाएगा। यह सीसीपी के शासन के तहत सबसे दूरदराज के हिस्सों में बिगड़ते मानवाधिकार रिकॉर्ड पर मुख्यधारा के मीडिया का ध्यान और सार्वजनिक चर्चा को मजबूत करने की भी उम्मीद करता है।

◆ ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के प्रतिनिधिमंडल ने अपने अध्यक्ष के नेतृत्व में निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

tibet.net, ३१ अक्तूबर, २०२३

धर्मशाला। ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के एक प्रतिनिधिमंडल ने ३० अक्तूबर २०२३ को अपने अध्यक्ष के नेतृत्व में निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग और स्थायी समिति के सदस्यों से मुलाकात की।

प्रतिनिधिमंडल में ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के अध्यक्ष हुआंग यू-लिन, ओवरसीज कंपेट्रियट कल्चर एंड एजुकेशन फाउंडेशन के सलाहकार वू कुओ पेन और ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के उप निदेशक वू पिंग-छुंग शामिल थे। उनके साथ ताइवान स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि केलसांग ग्यालछेन भी थे।

प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए अध्यक्ष ने चीनी सरकार की नीतियों में पारदर्शिता की कमी के बारे में वैश्विक मंच पर जागरुकता फैलाने के लिए ताइवानी, तिब्बती, उग्युर और इनर मंगोलियाई लोगों के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को कई तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडलों, भारत और विदेशों में ताइवानी दूतावासों की बैठकें और दौरे के अलावा निर्वासित तिब्बती संसद में ताइवानी प्रतिनिधियों की मेजबानी के बारे में जानकारी दी।

तिब्बत के अंदर की चिंताजनक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए अध्यक्ष ने चीन के कब्जे वाले तिब्बत में हो रहे अत्याचारों पर वैश्विक ध्यान आकर्षित किया। इसमें उन्होंने तिब्बत में सांस्कृतिक संहार, मनमाने ढंग से हिरासत में लिए जाने, हिरासत में होने वाली मौतों और अन्य घटनाओं पर वैश्विक ध्यान आकर्षित करने को जरूरी बताया। उन्होंने बताया कि वहां तिब्बती कैसे शांतिपूर्ण प्रतिरोध करते हुए दमन को सह रहे हैं।

स्पीकर ने वाशिंगटन डीसी में तिब्बत पर आठवें विश्व सांसदों के सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) के समापन के बाद कुछ ताइवानियों के साथ बातचीत को याद किया और दोनों लोकतंत्रों के बीच मजबूत समन्वय की आवश्कता को दोहराया।

डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग तेखांग ने बहुत खुशी के साथ प्रतिनिधियों का स्वागत किया और निर्वासित तिब्बती लोकतंत्र की अब तक की विकास-यात्रा का ब्यौरा अतिथियों के समक्ष रखा। उन्होंने तिब्बती पीपुल्स डेप्युटीज़ (सीटीपीडी) के संविधान के १९६० में लागू होने से लेकर अब तक तिब्बती राजनीति के लोकतंत्रीकरण की विकास-यात्रा पर प्रकाश डाला जो परम पावन दलाई लामा का उपहार है। तिब्बती पीपुल्स डेप्युटीज़ (सीटीपीडी) को ही बाद में संशोधित कर निर्वासित तिब्बती संसद बना दिया गया।

डिप्टी स्पीकर ने कई वैश्विक शिखर सम्मेलनों में तिब्बती सांसदों की भागीदारी के बारे में भी बात की। इसके साथ ही निर्वासित तिब्बती संसद को ई-संसद बनाने के दृष्टिकोण और अन्य आगामी परियोजनाओं और सम्मेलनों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इसके लिए तिब्बती, ताइवानी, उग्युर, मंगोलियाई और हांगकांग के लोगों के बीच समन्वित प्रयास और सहयोग की जरूरत को दोहराया।

ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के अध्यक्ष हुआंग यू-लिन ने परम पावन दलाई लामा की दूरदर्शी दृष्टि की प्रशंसा की। लिन ने विशेष गुणों और विशेषताओं के साथ तिब्बती राजनीति को लोकतांत्रिक बनाने की परम पावन दलाई लामा की दूरदर्शी दृष्टि की प्रशंसा की, जिसमें तिब्बत के तीनों पारंपरिक

प्रांतों, धार्मिक पंथों आदि के प्रतिनिधियों को लेकर इसकी बहुत ही अनूठी रचना की गई है।

सुबह परम पावन दलाई लामा से मुलाकात करने के बाद अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हुए लिन ने भारतीय संसद और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की कांग्रेस के कामकाज में परस्पर विरोधाभास को लेकर परम पावन दलाई लामा द्वारा की गई टिप्पणियों के बारे में बात की। परम पावन ने इसका उल्लेख अपनी जीवनी 'माई लैंड एंड माई पीपुल' में किया गया है। इसने परम पावन को न्यायपूर्ण समाज के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने के लिए बहुत प्रेरित किया।

उन्होंने आगे कहा कि स्पीकर और डिप्टी स्पीकर सक्रिय लोकतंत्र को सक्षम बनाने में महती जिम्मेदारी निभाते हैं और कहा कि उनकी बातचीत और शैक्षिक यात्रा प्रेरणादायक रही।

ताइवान फाउंडेशन फॉर डेमोक्रेसी के अध्यक्ष ने तिब्बतियों और ताइवान के बीच समन्वय को मजबूत करने पर जोर दिया, जिनकी किस्मत एक जैसी है और कहा कि उन्हें अपने समान उदेश्यो के लिए मिलकर काम करना चाहिए।

ओवरसीज कंपेट्रियट कल्चर एंड एजुकेशन फाउंडेशन के सलाहकार वू कुओ पेन ने भी अपने बहुमूल्य सुझाव दिए और छोटी आबादी और सीमित संसाधनों के बावजूद महत्वपूर्ण योगदान में निर्वासित तिब्बतियों की सफलता की सराहना की। पेन तिब्बती धार्मिक और पर्यावरणीय पहलुओं में अपना योगदान देना चाहते हैं।

मेहमानों को औपचारिक तौर पर खटक (स्कार्फ) भेंट करने और स्मृति चिह्नों के आदान-प्रदान के बाद संसद भवन के भ्रमण पर ले जाया गया।

◆ बीटीएसएम के उत्तर क्षेत्र चैप्टर ने रजत जयंती मनाई

tibet.net, ०९ अक्तूबर, २०२३

चंडीगढ़। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) की रजत जयंती पर इसके उत्तर क्षेत्र चैप्टर ने ०६ अक्तूबर-२०२३ को चंडीगढ़ के लॉ भवन में सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में सम्मानित उपस्थित लोगों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के वरिष्ठ नेता श्री प्रदीप जोशी जी, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और हरियाणा साहित्य संस्कृति अकादमी के वर्तमान कुलपति डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री जी, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया (सीजीटीसी-आई) के संयोजक श्री आर.के. खिरमे जी, बीटीएसएम के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य सरदार हरजीत सिंह ग्रेवाल जी और सीटीए में सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) में अतिरिक्त सचिव तेनज़िन लेक्शे शामिल थे।

इन विशिष्ट अतिथियों के अलावा भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के समन्वयक थुप्टेन रिनज़िन, आईटीसीओ की स्टाफ सदस्य ताशी डेकी, बीटीएसएम के नेता, प्रमुख स्थानीय हस्तियां और बीटीएसएम के तीन सौ से अधिक सदस्यों के अलावा समुदाय के प्रतिनिधि इस अवसर पर उपस्थित हुए।

बीटीएसएम के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय शर्मा जी ने बीटीएसएम के गठन से लेकर अब तक की यात्रा का व्यापक विवरण पेश किया और कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट किया।

श्री प्रदीप जोशी जी ने तिब्बती भाइयों और बहनों को लगे घावों को भरने और तिब्बत को चीनी कब्जे से मुक्त कराकर उनकी पीड़ा दूर करने की अनिवार्यता पर जोर दिया। डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री ने शांति के समर्थकों के रूप में तिब्बती संस्कृति और तिब्बती बौद्ध धर्म के वैश्विक महत्व को रेखांकित किया, जबकि इस शांति को बाधित करने वाले चीन के द्वेषपूर्ण इरादों पर अफसोस जताया। उन्होंने तिब्बत की मुक्ति सुनिश्चित करने के लिए चीन के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई का आह्वान किया।

अतिरिक्त सचिव तेनजिंग लेक्शे ने भारत-तिब्बत संबंधों और तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने के लिए भारत की सरकार और भारत के लोगों की अपरिहार्य जिम्मेदारी के बारे में बताया।

अपने संबोधन में श्री आर.के. खिरमेजी ने १९६२ के युद्ध को याद करते हुए कहा कि भारत २०२३ में एक मजबूत राष्ट्र के रूप में खड़ा है जो चीन से अपनी शर्तों पर निपटने में सक्षम है।

बीटीएसएम के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य सरदार हरजीत सिंह ग्रेवाल ने विस्तारवादी चीन को दुनिया भर के शांतिपूर्ण, लोकतांत्रिक देशों के लिए खतरा बताया।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने सम्मेलन में तिब्बत से संबंधित किताबें और ब्रोशर वितरित कीं। इसने नव स्थापित चंडीगढ़ मेन-छे-खांग क्लिनिक को अपने उत्पादों और सेवाओं के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए आमंत्रित करके इस कार्यक्रम में योगदान दिया।

क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस (आरटीवाईसी) के सदस्यों ने दर्शकों के सामने पारंपरिक तिब्बती नृत्य प्रस्तुत किया। समारोह में तिब्बत के बारे में वृत्तचित्र भी दिखाए गए। इस कार्यक्रम में सहमना व्यक्तियों और संगठनों को ऑनलाइन चर्चा में शामिल होने के लिए नेटवर्किंग की सुविधा भी प्रदान की गई।

◆ दक्षिण भारत में स्थापित पांच तिब्बती बस्तियों के सेटलमेंट अधिकारियों और सीआरओ ने कर्नाटक सरकार के उच्च अधिकारियों से शिष्टाचार मुलाकात की

tibet.net, ११ अक्तूबर, २०२३

बेंगलुरु। दक्षिण भारत क्षेत्र के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी (सीआरओ) जिग्मे सुल्ट्रिम और दक्षिण भारत स्थित पांच तिब्बती बस्तियों के तिब्बती सेटलमेंट अधिकारियों (टीएसओ) ने ०५ से ०७ अक्तूबर २०२३ तक कर्नाटक के उच्च अधिकारियों से शिष्टाचार मुलाकात की।

सीआरओ द्वारा तिब्बतियों के लिए कर्नाटक राज्य सरकार के अनुदान सहायता और अन्य संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए पांच दक्षिणी तिब्बती बस्तियों के अधिकारियों-बायलाकुप्पे बस्ती के लुगसुंग सैमडुपलिंग और डिकी लारसो, मुंडगोड बस्ती के डोएगुलिंग, हुनसूर बस्ती के रबगयेलिंग और कोल्लेगल बस्ती के धोंडेनलिंग को बुलाया गया था।

बैठक के संयोजन के लिए सीआरओ जिग्मे सुल्त्रिम के नेतृत्व में टीएसओ ने ०५ अक्तूबर को विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय (एफआरआरओ) के सहायक निदेशक श्री रौसुंग, कर्नाटक सरकार के राजस्व विभाग के प्रधान सचिव आईएएस श्री राजेंद्र कुमार कटारिया, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के निदेशक श्री जिलानी एच. मोकाशी से मुलाकात की। अगले दिन ०७ अक्तूबर को तिब्बती प्रतिनिधियों ने कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावर चंद गहलोत से मुलाकात की। मेहमान टीम ने कर्नाटक सरकार के ग्रामीण विकास और पंचायती राज (आरडीपीआर) मंत्री की अनुपस्थिति में उनके निजी सचिव से शिष्टाचार मुलाकात की।

◆ उत्तर प्रदेश के कुशीनगर स्थित बुद्ध डिग्री पीजी कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया

tibet.net, १७ अक्तूबर, २०२३

कुशीनगर। हर शुरुआत का अंत होता है। यह संसार का साश्वत सत्य है। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण से इस सत्य का साक्षात्कार भी होता है। इसकी याद में १६ अक्तूबर २०२३ को भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ), भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) और उत्तर प्रदेश के कुशीनगर स्थित बुद्ध डिग्री पीजी कॉलेज द्वारा संयुक्त रूप से कॉलेज के सभागार में 'तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम' का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि सामाजिक कार्यकर्ता श्री राकेश जयसवाल, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़-इंडिया (सीजीटीसी-आई) के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुरेंद्र कुमार, नामग्याल तिब्बती मठ, कुशीनगर के प्रभारी भिक्षु तेनक्योंग, भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) के डॉ. शुभ लाभ, कॉलेज के संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

उपस्थित लोगों में भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के समन्वयक थुप्टेन रिनज़िन, आईटीसीओ के उप समन्वयक और प्रमुख स्थानीय हस्तियां शामिल थीं।

महाविद्यालय के डॉ. निगम मौर्य ने कार्यक्रम का परिचय दिया तथा कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने विद्यार्थियों से कार्यक्रम का सार्थक उपयोग करने का आह्वान किया।

श्री सुरेंद्र कुमार ने प्राचीन काल से भारत-तिब्बत संबंधों, चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे और सीमा सुरक्षा के संदर्भ में भारत के लिए इसके निहितार्थ के बारे में बात की। सुरेंद्र कुमार ने याद दिलाया कि कैसे भारत गैरकानूनी चीनी कब्जे से पहले तिब्बत के साथ प्राकृतिक और खुली सीमा से जुड़ा हुआ था और इस बात पर जोर दिया कि क्यों भारत को तिब्बत के उचित कारण के लिए खड़े होने की जरूरत है।

श्री राकेश जयसवाल ने अपने संक्षिप्त संबोधन में तिब्बती मुद्दे के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया और भविष्य में अपने पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया।

आईटीसीओ समन्वयक थुप्टेन रिनज़िन ने कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करने के कारण के बारे में बताते हुए कहा कि युवा भारतीयों को भारत और तिब्बत के बीच प्राचीन संबंधों के साथ-साथ तिब्बत के अंदर की वर्तमान स्थिति और तिब्बती मुक्ति साधना का समर्थन करने की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करना है।

थुप्टेन ने आगे -भारत और तिब्बत के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक करुणा, स्वतंत्र तिब्बत के बारे में तथ्य, तिब्बत पर गैरकानूनी कब्ज़ा, परम पावन १४वें दलाई लामा जी और हजारों तिब्बती लोगों का निर्वासन में पलायन, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) का संचालन, तिब्बत के अंदर की वर्तमान स्थिति और तिब्बत भारत के लिए क्यों मायने रखता है?–जैसे विषयों पर एक पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया।

पूर्व विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने भारत के तिब्बत के साथ चलने वाले भाषाई और आध्यात्मिक संबंधों के बारे में बात की। उन्होंने भारतीय युवाओं से तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने और एकजुटता दिखाने का आह्वान किया।

श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने कहा, 'एक दिन तिब्बती लोगों के पास वह दिन होगा जब वे तिब्बत वापस जा सकेंगे और तिब्बत में रह रहे तिब्बतियों के साथ फिर से मिल सकेंगे। तिब्बत एक दिन अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त करेगा और यह केवल समय की बात है।'

आईटीसीओ की पहल पर कॉलेज में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में ३० से अधिक छात्रों ने भाग लिया और शीर्ष पांच चयनित निबंधों को पुरस्कार वितरित किए गए और सभी प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में ३०० से अधिक छात्रों सहित कुछ मीडिया प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

समापन अवसर पर तेनज़िन जॉर्डन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

कार्यक्रम में धर्मशाला से तिब्बत संग्रहालय को भी आमंत्रित किया गया था और उन्होंने परिसर में 'भारत-तिब्बत संबंध' शीर्षक से एक फोटो प्रदर्शनी लगाई, जिसमें छात्रों और संकायों की भीड़ उमड़ पड़ी।

समारोह में भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली ने तिब्बत से संबंधित पुस्तकें और ब्रोशर भी वितरित किए।

◆ उत्तर प्रदेश के पावानगर महावीर इंटर कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

tibet.net, १८ अक्तूबर, २०२३

उत्तर प्रदेश। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में चल रही 'तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम' पहल के तहत कार्यक्रम का दूसरा दिन फाजिलनगर में पावानगर महावीर इंटर कॉलेज केसभागार में १७ अक्टूबर, २०२३ को आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) और भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास था।

मुख्य अतिथि कॉलेज प्राचार्य डॉ. अक्षयबर पांडे, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया (सीजीटीसी-आई) के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुरेंद्र कुमार जी, नामग्याल तिब्बती मठ कुशीनगर के प्रभारी भिक्षु तेनक्योंग, बीटीएसएम से डॉ. शुभ लाभ जी, संकाय सदस्य, छात्र, आईटीसीओ समन्वयक थुप्टेन रिनज़िन, आईटीसीओ उप समन्वयक तेनज़िन जॉर्डन और विभिन्न स्थानीय हस्तियां इस कार्यक्रम में उपस्थित थीं।

श्री सुरेंद्र कुमार जी ने प्राचीन भारत-तिब्बत संबंधों, तिब्बत पर चीन के अवैध कब्जे और भारत की सीमा सुरक्षा पर इसके प्रभाव पर चर्चा की। उन्होंने तिब्बत के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध और तिब्बती मुक्ति साधना को समर्थन देने की आवश्यकता पर बल दिया।

थुप्टेन रिनज़िन ने तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया, जिसका उद्देश्य युवा भारतीयों को भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक संबंधों, तिब्बत की वर्तमान स्थिति और तिब्बती स्वतंत्रता के समर्थन के महत्व के बारे में शिक्षित करना है।

उन्होंने भारत और तिब्बत के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध, तिब्बत पर गैरकानूनी कब्जे और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की भूमिका सहित विभिन्न विषयों पर एक पावर पॉइंट प्रस्तुति भी दी।

डॉ. अक्षयबर पांडे ने भारत और तिब्बत के बीच आध्यात्मिक संबंध पर प्रकाश डाला। उन्होंने नालंदा और तिब्बत के बीच बौद्ध गुरुओं के आवागमन का उल्लेख किया, जिसने तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रसार में योगदान दिया।

उन्होंने तिब्बत के महत्व और इसे लेकर चीन की असुरक्षा पर भी चर्चा की। इसके अतिरिक्त उन्होंने तिब्बत पर चीन के कब्जे के कारण उत्पन्न डोकलाम और गलवान सीमा मुद्दों का उल्लेख किया और तिब्बती लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने में सीटीए की भूमिका पर जोर दिया।

कार्यक्रम में ३०० से अधिक छात्र और कुछ मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे। समापन पर तेनज़िन जॉर्डन ने उपस्थित लोगों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में धर्मशाला से तिब्बत संग्रहालय को भी आमंत्रित किया गया था और उन्होंने परिसर में 'भारत-तिब्बत संबंध' शीर्षक से एक फोटो प्रदर्शनी लगाई, जिसमें छात्रों और संकायों की भीड़ उमड़ पड़ी।

समारोह में भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली ने तिब्बत से संबंधित पुस्तकें और ब्रोशर भी वितरित किए।

◆ उत्तर प्रदेश के कुशीनगर और पडरौना के कॉलेजों में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

tibet.net, १९ अक्तूबर, २०२३

उत्तर प्रदेश। भारतीय कॉलेज छात्रों के बीच तिब्बती मुद्दे के बारे में जागरुकता बढ़ाने की पहल के तहत उत्तर प्रदेश राज्य के दो जिलों- पडरौना और कुशीनगर में दो अलग-अलग कॉलेजों में १८ अक्तूबर-२०२३ को 'तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम' के तीसरे और अंतिम दिन का समारोह आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) के डॉ. शुभ लाभ जी के सहयोगात्मक प्रयास से भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) द्वारा आयोजित किया गया था।

इस कार्यक्रम के तहत उदित नारायण पी.जी. कॉलेज में मुख्य अतिथि के रूप में गृह मंत्रालय के पूर्व राज्य मंत्री और भारतीय संसद के पूर्व सदस्य श्री रतनजीत प्रताप नारायण सिंह जी शामिल हुए।

कॉलेज की प्राचार्या डॉ. ममता मणि त्रिपाठी जी और हनुमान इंटरमीडिएट कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र दत्त शुक्ला भी कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया (सीजीटीसी-आई) के श्री सुरेंद्र कुमार जी, संकाय सदस्यों, छात्रों और स्थानीय हस्तियों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित थे।

अंग्रेजी विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. शांता सुरजेयी ने कार्यक्रम का परिचय दिया और समारोह का संचालन किया।

आईटीसीओ समन्वयक थुप्टेन रिनज़िन ने कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करने के कारण के बारे में बताया और कहा कि युवा भारतीयों को भारत और तिब्बत के बीच प्राचीन संबंधों के साथ-साथ तिब्बत के अंदर की वर्तमान स्थिति और तिब्बती मुक्ति साधना का समर्थन करने की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करना है।

उन्होंने भारत और तिब्बत के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों, तिब्बत पर गैरकानूनी कब्जा, स्वतंत्र तिब्बत के बारे में तथ्य, तिब्बत से तिब्बतियों का भारत में पलायन, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की भूमिका, तिब्बत में वर्तमान स्थिति और तिब्बत भारत के लिए क्यों मायने रखता है, सहित विभिन्न विषयों को कवर करने के लिए पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन का उपयोग किया।

श्री सुरेंद्र कुमार जी ने प्राचीनकाल से भारत-तिब्बत संबंधों, तिब्बत पर चीन के अवैध कब्जे और चीन के प्रति शत्रुता की चिंताओं के बावजूद भारतीय संसद और सरकार में तिब्बती मुद्दे के लिए अधिक समर्थन की आवश्यकता पर चर्चा की।

मुख्य अतिथि श्री रतनजीत प्रताप नारायण सिंह जी ने तिब्बत में गंभीर स्थिति पर जोर दिया और कॉलेज के छात्रों से जागरुकता कार्यक्रमों और ऑनलाइन शोध के माध्यम से तिब्बती मुद्दे के बारे में अधिक जानने का आग्रह किया। उन्होंने छात्रों को संयुक्त राष्ट्र में याचिकाएं भेजने और विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर तिब्बती लोगों के साथ एकजुटता व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

मुख्य अतिथि श्री रतनजीत प्रताप नारायण सिंह जी ने कहा, 'आप सभी कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद राष्ट्र की सेवा करेंगे और चाहे आप कहीं भी जाएं और सेवा करें, आपको हमेशा तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने, तिब्बत में तत्काल स्थिति के लिए सहानुभूति दिखाने और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करते रहना चाहिए।'

उप समन्वयक तेनज़िन जॉर्डन ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए मुख्य अतिथि और कार्यक्रम में उपस्थित अन्य अतिथियों और छात्रों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के बाद मुख्य अतिथि को परिसर में तिब्बत संग्रहालय द्वारा लगाई गई फोटो प्रदर्शनी का भ्रमण कराया गया। दोपहर में एक और तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम एक इंटर-कॉलेज में आयोजित किया गया, जहां कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार सिंह जी ने श्री सुरेंद्र कुमार जी, थुप्टेन रिनज़िन और तेनज़िन जॉर्डन का स्वागत और अभिनंदन किया।

थुप्टेन रिनज़िन ने कार्यक्रम की शुरुआत की और उदित नारायण पी.जी. कॉलेज में पहले दी गई पावर पॉइंट प्रस्तुति की तरह ही प्रस्तुति दी।

दोनों कॉलेजों के कार्यक्रम में कुल मिलाकर ७०० से अधिक कॉलेज छात्रों ने भाग लिया।

इसके अतिरिक्त धर्मशाला से तिब्बत संग्रहालय को आमंत्रित किया गया था, जिसने परिसर में 'भारत-तिब्बत संबंध' शीर्षक से एक फोटो प्रदर्शनी लगाई। फोटो प्रदर्शनी ने छात्रों और शिक्षकों को काफी आकर्षित किया।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली ने कार्यक्रम के दौरान तिब्बत से संबंधित किताबें और ब्रोशर वितरित किए और कॉलेज पुस्तकालय को भी दान दिए।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में अपने तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न किया, जिसमें चार अलग-अलग कॉलेजों में १४०० से अधिक कॉलेज छात्र शामिल हुए।

◆ नागपुर में तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक आयोजित

tibet.net, २४ अक्तूबर, २०२३

नागपुर। तिब्बत समर्थक समूहों के बीच बेहतर समन्वय को बढ़ावा देने और सातवें अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन की कार्ययोजना का पालन करने के लिए कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने २३ अक्तूबर-२०२३ को संयुक्त रूप से नागपुर और उसके आसपास स्थित तिब्बत समर्थक समूहों की बैठक आयोजित की।

इस बैठक में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस), भारत-तिब्बत सहयोग आंदोलन (बीटीएसएम), नेशनल कंपेन फॉर फ्री तिब्बत सपोर्ट (एनसीएफटीएस), बौद्ध सोसायटी ऑफ इंडिया जैसे संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले ३० से अधिक सदस्यों और व्यक्तिगत तिब्बत समर्थकों ने भाग

लिया। उपस्थिति उल्लेखनीय हस्तियों में आईटीएफएस महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री अमृत बंसोड़, भारत-तिब्बत सहयोग आंदोलन के अध्यक्ष श्री अशोक मेंढे और बौद्ध सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंद्र बोधि पटेल शामिल थे।
क्षेत्र में भविष्य के सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देने के लिए बुलाई गई बैठक में क्षेत्रीय तिब्बती युवा कांग्रेस (आरटीवाईसी) और क्षेत्रीय तिब्बती महिला संघ (आरटीडब्ल्यूए) के प्रतिनिधियों के साथ-साथ नॉर्ग्येलिंग तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी धोंदुप सांगपो को भी आमंत्रित किया गया था।
आईटीसीओ, नई दिल्ली का प्रतिनिधित्व करने वाली ताशी डेकी ने बैठक में आए लोगों का गर्मजोशी से स्वागत और इसके उद्देश्यों के बारे में बताने के साथ बैठक की शुरुआत की। उन्होंने तिब्बत की वर्तमान स्थिति और तिब्बत मुक्ति साधना में नवीनतम विकास के बारे में जानकारी प्रदान की। इसके अलावा उन्होंने सातवें अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन की घोषणा और कार्य योजनाएं प्रस्तुत कीं और सदस्यों से इन योजनाओं का पालन करने और उन पर कार्रवाई करने का आग्रह किया।
श्री अशोक मेंढे ने अपने संबोधन में भारत सरकार द्वारा परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न से सम्मानित करने की वकालत की। उन्होंने तिब्बत में पर्यावरण संबंधी मुद्दों के समाधान के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने तिब्बत और तिब्बतियों के लिए निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया और तिब्बती मुद्दे पर सभी सदस्यों के बीच एकता का आह्वान किया।
श्री अमृत बंसोड़ ने परम पावन दलाई लामा को भारत रत्न से सम्मानित करने के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया और स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय युवाओं के बीच तिब्बत के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता को रेखांकित किया।
बैठक में तिब्बत समर्थक समूहों की पिछले कुछ महीनों की गतिविधियों और कार्यक्रमों की समीक्षा की गई, जिनमें सातवें अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन की कार्ययोजना के अनुरूप आगामी पहलों पर चर्चा शामिल थी। सदस्यों ने क्षेत्र में तिब्बती आंदोलन को और मजबूत करने और आने वाले वर्षों में समन्वय में सुधार के लिए सुझाव और प्रतिक्रियाएं भी दीं।
श्री अरविंद निकोसे ने बैठक में खासकर नागपुर के व्यस्त त्योहारी सीजन के दौरान भाग लेने के लिए सीजीटीसी-आई की ओर से सभी उपस्थित लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सदस्यों से तिब्बती मुद्दे और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अपना अटूट समर्थन जारी रखने का आह्वान किया।

◆ नागपुर में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

tibet.net, २५ अक्तूबर, २०२३

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) और नेशनल कैंपेन फॉर फ्री तिब्बत सपोर्ट (एनसीएफटीएस) ने २४ अक्तूबर-२०२३ को ६७वें धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस पर महाराष्ट्र के नागपुर स्थित दीक्षाभूमि में तिब्बत पर एक दिवसीय जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस समाज सुधारक, दूरदर्शी नेता और भारतीय संविधान के वास्तुकार डॉ. बी.आर. आंबेडकर के बौद्ध धर्म में दीक्षित होने की स्मृति में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। १४ अक्तूबर, १९५६ को डॉ. आंबेडकर ने नागपुर की दीक्षा भूमि में अपने हजारों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया था। यह दिन आंबेडकरवादी बौद्धों और डॉ. बी.आर. आंबेडकर के अनुयायियों के लिए बहुत महत्व रखता है। वे उनके आदर्शों और उपलब्धियों को याद करने के लिए उस दिन दीक्षा भूमि में हजारों की संख्या में इकट्ठा होते हैं।

कार्यक्रम में एक स्टॉल लगाया गया था, जहां भारत और तिब्बत दोनों देशों के राष्ट्रीय झंडे और 'तिब्बत बचाओ, भारत बचाओ' के बैनर लगे थे। पृष्ठभूमि में डॉ. बी.आर. आंबेडकर का एक उल्लेखनीय वक्तव्य प्रदर्शित किया गया था। आंबेडकर ने १९५१ में लिखा था, '१९४९ में चीन को मान्यता देने के बजाय यदि भारत ने तिब्बत को यह मान्यता दी होती, तो कोई भारत-चीन सीमा संघर्ष नहीं होता।'

स्टॉल पर उपस्थित लोगों में सीजीटीसी-आई के राष्ट्रीय सह-संयोजक और एनसीएफटीएस के अध्यक्ष श्री अरविंद निकोसे, एनसीएफटीएस के सदस्य और नागपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों से समर्पित तिब्बत समर्थक, आईटीसीओ से ताशी डेकी और छोनी छेरिंग शामिल थे।

दिन भर में सैकड़ों लोगों ने स्टॉल का दौरा किया, जहां उन्हें तिब्बत के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की गई और उन्हें हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तिब्बत से संबंधित साहित्य देखने का मौका मिला। सभी आगंतुकों को हिंदी और मराठी में निःशुल्क पर्चे वितरित किए गए। उपस्थित लोगों की गर्मजोशी से भरी प्रतिक्रिया ने स्वतंत्रता के लिए अहिंसक तिब्बती संघर्ष के प्रति उनके अटूट समर्थन और एकजुटता को प्रदर्शित किया।

ताशी देकी ने वहां उपस्थित मीडिया से बातचीत कर तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला और भारत-तिब्बत के बीच गहरे और प्राचीन संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने तिब्बती मुक्ति साधना की अहिंसक प्रकृति पर जोर दिया और भारत के संदर्भ में न केवल भौगोलिक रूप से बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी तिब्बत के महत्व पर जोर दिया।

ताशी देकी ने बताया कि १९५० के दशक से पहले तिब्बत भारत और चीन के बीच एक बफर जोन के रूप में कार्य करता था, जो भारत-तिब्बत सीमा को शांतिपूर्ण बनाए रखता था। १९५० के दशक में तिब्बत पर चीनी कम्युनिस्ट आक्रमण के बाद ही चीन की सीमा भारत के निकट पहुंच गई, जिसके कारण अंततः १९६२ में भारत-चीन युद्ध हुआ और सीमा पर आज भी संघर्ष जारी है। उन्होंने पर्यावरणीय चिंताओं, विशेष रूप से तिब्बत में नदियों के दोहन पर भी प्रकाश डाला, जिसका भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जाहिर है कि एशिया की प्रमुख नदियां तिब्बती पठार से निकलती हैं।

सीजीटीसी-आई के पश्चिमी क्षेत्र के राष्ट्रीय सह-संयोजक और एनसीएफटीएस के अध्यक्ष अरविंद निकोसे ने ऐसे मौकों पर तिब्बत को लेकर जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करने के महत्व पर जोर दिया, जहां हजारों लोग इकट्ठा होते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से में अभी भी तिब्बत के बारे में जानकारी का अभाव है। इसलिए उनके बीच जागरुकता बढ़ाना और भारत में तिब्बत मुक्ति साधना को बढ़ावा देना जरूरी हो गया है।

२४ अक्तूबर की सुबह ताशी देकी ने एक अन्य स्थान पर धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। इसका आयोजन भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के नागपुर चैप्टर द्वारा किया गया था। यह कार्यक्रम नागपुर में लीवरेज ग्रीन्स के क्लब हाउस में हुआ और आईटीएफएस के सदस्य श्री

सचिन रामटेके द्वारा आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम के दौरान ताशी देकी को बड़ी संख्या में दर्शकों से जुड़ने और तिब्बती मुद्दे पर प्रकाश डालने का अवसर मिला।

संक्षेप में कहें तो तिब्बत पर दिन भर का जागरुकता कार्यक्रम बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचने और उन्हें तिब्बत, तिब्बती आंदोलन और भारत के संदर्भ में तिब्बत के महत्व के बारे में सूचित करने का शानदार और सफल आयोजन साबित हुआ। इसने आम भारतीयों के बीच तिब्बत के बारे में जागरुकता को प्रभावी ढंग से उप्तन्न किया और तिब्बती मुद्दे के लिए समर्थन को और मजबूत किया।

◆ भंडारा जिले के बेला के महेंद्र जूनियर साइंस कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

tibet.net, २६ अक्तूबर, २०२३

भंडारा। भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) के भंडारा चैप्टर के सहयोग से २५ अक्तूबर-२०२३ को महाराष्ट्र के भंडारा जिले के बेला स्थित महेंद्र जूनियर साइंस कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य हस्तियों में मुख्य अतिथि के तौर पर लोकप्रिय मराठी कवि और लेखक श्री प्रमोद कुमार अनारव, सम्मानित अतिथि में भंडारा नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष श्री महेंद्र गडकरी, कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया (सीजीटीसी-आई) के राष्ट्रीय सह-संयोजक (पश्चिमी क्षेत्र) श्री अरविंद निकोसे, आईटीएफएस महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री अमृत बंसोड़, आईटीएफएस नागपुर के श्री सचिन रामटेके, कॉलेज प्रिंसिपल श्री सचिन गभाने, कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल श्री मोरेश्वर घेदम के साथ ही आईटीसीओ से ताशी देकी और छोनी छेरिंग शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन और उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा परम पावन दलाई लामा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुई।
श्री अमृत बंसोड़ ने उपस्थित दर्शकों को तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम के उद्देश्य से अवगत कराते हुए परिचयात्मक भाषण दिया। उन्होंने तिब्बत, तिब्बत मुक्ति साधना और तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

श्री सचिन गभाने ने कॉलेज में तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की, जिसमें छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए इसके संभावित लाभों पर जोर दिया गया। इससे उन्हें तिब्बत की गहरी समझ हासिल करने में मदद मिली।

ताशी देकी ने तिब्बत जागरुकता कार्यक्रम के उद्देश्यों को स्पष्ट किया, जिसका उद्देश्य युवा भारतीयों को भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक संबंधों, तिब्बत के भीतर वर्तमान स्थिति और तिब्बत मुक्ति साधना के बारे में शिक्षित करना है। उन्होंने तिब्बत पर एक व्यापक पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन दिया, जिसमें भारत और तिब्बत के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध, तिब्बत पर अवैध कब्ज़ा, एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति, तिब्बत की वर्तमान स्थितियां और भारत के लिए तिब्बत के महत्वपूर्ण होने के कारण जैसे विषय शामिल थे।

श्री महेंद्र गडकरी और श्री प्रमोद कुमार अनारव ने भारत के लिए तिब्बत के महत्व को रेखांकित किया और कम्युनिस्ट चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे की निंदा की। उन्होंने तिब्बत और तिब्बती मुक्ति साधना के प्रति अपना समर्थन दोहराया।

श्री अरविंद निकोसे ने तिब्बत पर चीन के अवैध कब्जे और भारत की सीमा सुरक्षा पर इसके प्रभावों के बारे में चर्चा की। उन्होंने तिब्बत के साथ भारत के ऐतिहासिक संबंधों और तिब्बती मुक्ति साधना को समर्थन देने की आवश्यकता पर जोर दिया।

गणमान्य व्यक्तियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए और तिब्बत पर निबंध लिखने वाले पांच छात्रों को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने भी कॉलेज को तिब्बत से संबंधित पुस्तकें दान में दीं।
जागरुकता कार्यक्रम में कॉलेज के २५० से अधिक छात्रों और शिक्षकों ने भाग लिया।

आईटीसीओ कार्यक्रम अधिकारी छोनी छेरिंग ने गणमान्य व्यक्तियों, आईटीएफएस भंडारा, कॉलेज और कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

उन्होंने कहा, 'हमारे जागरुकता कार्यक्रम के सफल समापन के साथ भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) ने अपने संपर्क और जागरुकता अभियान का प्रभावी ढंग से समापन कर दिया है, जिसमें नागपुर क्षेत्र में तिब्बत समर्थक समूहों को शामिल किया गया है। हमारे प्रयासों में कॉलेज में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित करना और २३ से २५ अक्तूबर-२०२३ तक धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस में सक्रिय भागीदारी करना भी शामिल है।'

उन्होंने आगे कहा, 'मैं आईटीसीओ की ओर से कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया (सीजीटीसी-आई) के राष्ट्रीय सह-संयोजक (पश्चिमी क्षेत्र) श्री अरविंद निकोसे जी और नेशनल कैंपेन फॉर फ्री तिब्बत सपोर्ट (एनसीएफटीएस), आईटीएफएस नागपुर चैप्टर और अन्य तिब्बत समर्थक समूहों के साथ उनकी समर्पित टीम के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। उनके सामूहिक प्रयास इस संपर्क और जागरुकता कार्यक्रम की सफलता में सहायक बने हैं।

नई दिल्ली स्थित आईटीसीओ के समन्वयक थुप्टेन रिनज़िन ने कहा, 'आगे हमारा लक्ष्य आने वाले महीनों में अन्य क्षेत्रों तक पहुंचने का है। तिब्बती मुद्दे के लिए हमारा जागरुकता और समर्थन बढ़ाने का मिशन को जारी रहने वाला हैं।'

◆ क्या चीन तिब्बती पहचान को मिटाने के लिए नए आवासीय स्कूलों का उपयोग कर रहा है?

firstpost.com, २७ अक्तूबर, २०२३

तिब्बती कार्यकर्ताओं का अनुमान है कि चीन की कम्युनिस्ट सरकार द्वारा संचालित आवासीय विद्यालयों में लगभग १० लाख तिब्बती बच्चे पढ़ते हैं, हालांकि संख्या की पुष्टि करना मुश्किल है। उनका कहना है कि ये आवासीय स्कूल तिब्बती पहचान को मिटाने और तिब्बतियों को बहुसंख्यक चीनी हान संस्कृति में आत्मसात करने की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा हैं।

तिब्बत में शांगरी-ला के एक स्कूल में पहली कक्षा के छात्र डेस्क पर हाथ रखे हुए एक शिक्षक को ब्लैकबोर्ड पर तिब्बती वर्णमाला को ब्रश से मिटाते हुए देख रहे हैं। बाहर, ऊबड़-खाबड़ गगनचुंबी पहाड़ चमकीले नीले आसमान को छूते प्रतीत हो रहे हैं। २८०० मीटर (९१०० फीट) की ऊंचाई पर हवा साफ और कुरकुरी है, हालांकि थोड़ी पतली है।

शांगरी-ला का आवासीय स्कूल चीनी शैली की द्विभाषी शिक्षा का एक उदाहरण है। तिब्बती कार्यकर्ताओं के पास इसके लिए एक अलग शब्द है- 'जबरन आत्मसात करना'। इस वर्ष इस मुद्दे पर आधिकारिक ध्यान दिया जा रहा है। हालांकि संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार विशेषज्ञ और अमेरिका समेत कुछ पश्चिमी सरकारों के प्रतिनिधि इस प्रणाली की निंदा कर रहे हैं।

चीन ने पिछले १०-१२ वर्षों में पूरे तिब्बत में ग्रामीण स्कूलों को बंद कर दिया है और उनकी जगह केंद्रीकृत आवासीय स्कूल स्थापित कर दिए हैं। कई छात्र सुदूर गांवों से आते हैं और स्कूलों में रहते हैं। यह प्रथा केवल इसी क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पूरे तिब्बती क्षेत्रों में व्यापक प्रतीत होती है।

कार्यकर्ताओं का अनुमान है कि १० लाख तिब्बती बच्चे ऐसे बोर्डिंग स्कूलों में पढ़ते हैं, हालांकि संख्या की पुष्टि करना मुश्किल है। उनका कहना है कि ये स्कूल तिब्बती पहचान को खत्म करने और तिब्बतियों को बहुसंख्यक चीनी संस्कृति में आत्मसात करने की व्यापक रणनीति का हिस्सा हैं। स्कूल के अध्यापकों का कहना है कि पाठ्यक्रम में गीत और नृत्य जैसे तिब्बती पाठ भी शामिल हैं। उनका कहना है कि इन आवासीय स्कूलों की स्थापना दूरदराज के गरीब क्षेत्रों के बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए हुई थी।

शांगरी-ला स्कूल के प्रिंसिपल कांग झाक्सी ने हाल ही में लगभग १० विदेशी पत्रकारों को बताया, 'जातीय क्षेत्रों में आबादी बिखरी हुई है और सरकार ने शैक्षिक संसाधनों को मजबूत करने और छात्रों के लिए उत्कृष्ट शिक्षण और माहौल प्रदान करने के लिए बहुत प्रयास किए हैं। इस तरह से ये स्कूल कार्य करते हैं।' उधर बाहर रात्रि भोजन के समय कैफेटेरिया से बाहर छात्रों की कतारें देखी जा सकती थी।'

चीनी भाषा में बोल रहे कांग झाक्सी का यह नाम चीनी अनुवाद वाला है। वैसे तिब्बती में उनका मूल नाम खाम ताशी
होगा।

चीन लंबे समय से तिब्बती बौद्ध धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म सहित विभिन्न समुदायों और धर्मों को नया रूप और आकार देता रहा है। इसका विरोध करने का साहस करने वालों को वह जेल में डाल देता है। इस तरह वह बड़ी जातीय आबादी वाले क्षेत्रों में अशांति की किसी भी संभावना को खत्म करने की कोशिश कर रहा है, ताकि उन्हें लंबे समय से सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के विचारों और लक्ष्यों के साथ जोड़ा जा सके। पिछले दशक में कम्युनिस्ट नेता शी जिनपिंग के नेतृत्व में चीन सरकार का दृष्टिकोण विशेष रूप से तिब्बत के उत्तर स्थित झिंझियांग क्षेत्र में उग्युर समुदाय पर क्रूर कार्रवाई करते समय और सख्त हो गया है।

वैश्विक जनमत अपने पक्ष में बनाने के अभियान में चीन सरकार ने सिचुआन प्रांत के मुख्य रूप से तिब्बती क्षेत्र में विदेशी पत्रकारों के लिए दौरे का आयोजन किया। इस दौरान अधिकारियों ने स्कूलों, आर्थिक विकास परियोजनाओं, बौद्ध मठों और तिब्बती चिकित्सा अस्पताल के दौरे का आयोजन किया। इनमें से कई स्थानों पर, जिनमें आवासीय स्कूल भी शामिल हैं, आम तौर पर विदेशी मीडिया के लिए पहुंचना मुश्किल होगा। सभी साक्षात्कार सरकारी अधिकारियों की नजरों के सामने आयोजित किए गए।
चीन के कम्युनिस्टों ने १९४९ में सत्ता में आने के बाद १९५१ में तिब्बत पर शासन करने वाले बौद्ध धर्मतंत्र को उखाड़ फेंका। तिब्बती बौद्ध धर्म के प्रमुख पंथ के प्रमुख दलाई लामा १९५९ में हुए असफल विद्रोह के दौरान निर्वासन में भाग गए और तब से वापस नहीं लौटे।

तिब्बत में वर्षों से विरोध-प्रदर्शन भड़कते रहे हैं। लेकिन २००८ के बीजिंग ओलंपिक से पहले बड़े प्रदर्शनों के बाद सरकार ने गिरफ्तारी और धमकी के माध्यम से असहमति को कुचलने, तिब्बती पहचान को और अधिक चीनीकरण करने, हिमालय की दूसरी ओर उत्तरी भारत और नेपाल की सीमा से लगे सुदूर, पहाड़ी क्षेत्र का विकास और बुनियादी ढांचे पर भारी खर्च करने की योजना बनाई है।

परिवारों के पास कोई विकल्प नहीं है

सिचुआन का कार्दज़े फ्रेक्चर ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों, उफनती नदियों, काले बालों वाले चरते याक और चमचमाते पगोडा और स्तूपों की भूमि है। इसका एक हवाई अड्डा ४४०० मीटर (१४,५०० फीट) की ऊंचाई पर अवस्थित है जो दुनिया का सबसे ऊंचा नागरिक हवाई अड्डा है। ऊंचाई इतनी कि बीजिंग से गए पत्रकारों और सरकारी अधिकारियों की सांसें फूलने लगीं। कुछ को तो राहत के लिए ऑक्सीजन के सिलेंडर लगाने पड़े।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक दशक पहले जिस जगह पर शांगरी-ला नाम का शहर बसाया गया था, उस शहर में २०१२ में बोर्डिंग स्कूल खोल दिया गया था। स्कूल के पास सड़कों पर हॉलिडे इन एक्सप्रेस एंड सुइट्स सहित कतारबद्ध होटलें हैं और घाटी के ऊपर खड़ी चट्टानें हैं।

बोर्डिंग स्कूल को देखकर यह समझना मुश्किल था कि क्या छात्र खुश हैं या अपनी तिब्बती जीवन शैली खोने से दुखी हैं। वे आउटडोर कोर्ट पर बास्केटबॉल उछालते हैं या संगीत कक्षा में की बोर्ड पर एक सरल मार्ग को दोहराने की कोशिश करते हैं। उनके माता-पिता कहीं नज़र नहीं आए, हालांकि स्कूल के अधिकारियों ने कहा कि वे कभी भी आने के लिए स्वतंत्र हैं।

स्कूल के कुल ३९० छात्रों में से लगभग तीन-चौथाई प्राथमिक विद्यालय में रहते हैं। प्रिंसिपल कांग झाक्सी ने कहा कि कई माता-पिता घर से दूरी के कारण अपने बच्चों को आवासीय स्कूलों में भेजना पसंद करते हैं।

आम तौर पर बोलने वाले कार्यकर्ताओं का कहना है कि माता-पिता के पास कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि गांव के स्कूल बंद कर दिए गए हैं और अगर वे अपने बच्चों को उन ग्रामीण स्कूलों की जगह बने बड़े आवासीय स्कूलों में नहीं भेजेंगे तो उन्हें दंडित किया जा सकता है। शांगरी-ला बोर्डिंग स्कूल में जाने से पहले कांग झाक्सी ने आठ साल तक एक गांव में पढ़ाया। यह स्पष्ट नहीं था कि उसका पिछला स्कूल बंद कर दिया गया है या नहीं।

अमेरिका स्थित तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट के तिब्बती मूल के कनाडाई निदेशक लादोन टेथोंग ने कहा, 'आप छोटे बच्चों को उनके माता-पिता, परिवारों और समुदायों से दूर रखकर कोई सही विवेकपूर्ण काम नहीं कर रहे हैं और उन्हें बोर्डिंग स्कूलों में वह माहौल नहीं दे पाते हैं माहौल में वे तिब्बत में पलते-बढ़ते हैं।'
उनके समूह ने २०२१ के अंत में एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें चीनी सरकारी दस्तावेजों और अन्य शोधों के आधार पर अनुमान लगाया गया कि कम से कम ८,००,००० तिब्बती बच्चे या स्कूल जाने वाली आबादी का लगभग ८०% ऐसे बोर्डिंग स्कूलों में थे। २०२० के अंत में चीन छोड़ देने वाले तिब्बती शिक्षा विशेषज्ञ ग्याल लो का अनुमान है कि कम से कम १,००,००० प्री-स्कूल बोर्डिंग स्कूल चल रहे हैं, जहां कुल मिलाकर १० लाख के करीब बच्चे हैं। चीन बोर्डिंग स्कूलों में इतनी संख्या में बच्चों के होने की बात से इनकार करता है।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट में कार्यरत ग्याल लो ने कहा कि उन्होंने २०१६ में अपनी ४ और ५ साल की पोती पर पड़ने वाले प्रभाव को देखने के बाद फील्ड रिसर्च के लिए ५० से अधिक बोर्डिंग प्री-स्कूलों का दौरा किया। उन्होंने इसे एक वैचारिक साजिश बताया। उन्होंने कहा कि उनका अंतिम लक्ष्य यही है कि जितनी जल्दी हो सके बच्चों को उनकी संस्कृति से बाहर निकालें ताकि वे तिब्बती बोलने या पढ़ने से विमुख हो जाएं।'

दुनिया बोल रही है

हांगकांग और उत्तर-पश्चिमी चीन के झिंझियांग क्षेत्र में उग्यूरों के खिलाफ चीन की कार्रवाइयों के खिलाफ चलाए जा रहे मानवाधिकार अभियान दुनिया भर में काफी चर्चित हुए, लेकिन तिब्बत में बोर्डिंग स्कूलों की स्थापना ने तिब्बत को अंतरराष्ट्रीय चेतना को वापस सचेत करने में मदद की है।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय ने फरवरी में घोषणा की कि संयुक्त राष्ट्र के विशेष प्रतिवेदक के रूप में कार्य करने वाले तीन बाहरी विशेषज्ञों ने नवंबर २०२२ में चीन के विदेश मंत्री को १७ पन्नों का पत्र भेजा था। इसमें विशेषज्ञों ने तिब्बती शैक्षणिक, धार्मिक और भाषाई संस्थानों के खिलाफ सिलसिलेवार दमनकारी कार्रवाइयों के माध्यम से तिब्बती संस्कृति को चीनी संस्कृति में आत्मसात करने की चीनी नीति के बारे में अपनी चिंता से उन्हें अवगत कराया था।

विशेषज्ञों ने आवासीय स्कूलों को लेकर एक प्रेस विज्ञप्ति जारी किया था, जिसका शीर्षक था: 'संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ १० लाख तिब्बती बच्चों को परिवारों से अलग करने और आवासीय स्कूलों में जबरन भर्ती कराए जाने से चिंतित हैं।'

इसके बाद आवासीय विद्यालयों के इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र विशेषज्ञ समिति ने मार्च में चीन में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों को लेकर आयोजित दो दिवसीय सुनवाई के एजेंडे में शामिल किया। चीनी अधिकारियों ने सुनवाई में आलोचना का जवाब दिया। सुनवाई के बाद १८ सदस्यीय समिति ने अपनी अंतिम रिपोर्ट में चीन से 'तिब्बती बच्चों पर थोपी गई ज़बरन आवासीय स्कूल प्रणाली को तुरंत समाप्त करने और निजी तिब्बती स्कूलों की स्थापना की अनुमति देने का आह्वान किया।'

इसके बाद जर्मन विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा है कि उनकी सरकार इस आह्वान का समर्थन करती है और चेक और कनाडाई सांसदों ने आवासीय स्कूलों को समाप्त करने के लिए बयान जारी किए हैं। अमेरिका ने इन सबसे आगे बढ़कर अगस्त में घोषणा की कि वह स्कूलों में शामिल अधिकारियों पर वीज़ा प्रतिबंध लगाएगा। अमेरिका ने कहा कि इन आवासीय स्कूलों का उद्देश्य तिब्बती लोगों की युवा पीढ़ियों के बीच तिब्बत की विशिष्ट भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं को खत्म करना है।

हालांकि शांगरी-ला के आवासीय स्कूल में दूसरे दिन सूरज डूबने तक लगभग आधी दुनिया में बदलाव के कोई संकेत नहीं दिखे।

चीन ने आलोचनाओं को सिरे से खारिज कर दिया है। चीनी विदेश मंत्रालय के एक प्रवक्ता ने कहा कि सरकार अमेरिकी कार्रवाई का जवाब उन अमेरिकियों पर वीजा प्रतिबंध लगाकर देगी जो 'चीन को बदनाम करने के लिए अफवाहें फैलाते हैं या लंबे समय से तिब्बत से संबंधित मुद्दों में हस्तक्षेप करते आ रहे हैं।'

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Thupten Rinzin
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

थुप्तेन रिन्ज़ीन
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पता: भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोन: 011–29830578
ई–मेल: coordinator@indiatibet.net

कालोन नोरज़िन डोल्मा के साथ यूरोपीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल।

ऑस्ट्रिया और जर्मनी के यूरोपीय सांसदों ने तिब्बत मानवाधिकार मुद्दे पर चिंता जताई।